सही प्रकार जीवन जीने की एक योजना
डेव ऍंड्रूज़
उसी परिवर्तन को बनने क प्रयास करें,जो आप संसार में देखना चाहते हें

पॅज २ विषय-सूची

यॅशू मसीह द्वारा पर्वत पर दियॅ उपदॅश में निहित सही प्रकार से जीवन जीनॅ की सलाह(परामर्श)

परिचय: योजना सही प्रकार से जीवन जीनॅ की-उस परिवर्तन को स्वयं बनियॅ,जिसॅ आप संसार मॅं भी दॅख्ना चाहतॅ हैं:

(१) दरिद्र व्यक्ति आशीषित हैं-और वॅ भी ,जो उनकॊ अपनी आत्मा मॅं बस कर जीतॅ हैं
(२)वॅ आशीषित हैं,जो अभी रॊ रहॅ हैं-जो ज़ोर-ज़ोर सॅ ऊंचे स्वर मॅं विलाप कर रहॅ हैं
(३)वे विनम्र व्यक्ति आशीषित हैं-जो कि आत्म-संयम का प्रयास करतॅ हैं
(४)वॅ व्यक्ति आशीषित हैं,जो सही रास्तॅ की खोज में लगॅ हैं-जो अन्य व्यक्तियों कॅ साथ सही प्रकार सॅ पॅश आने का प्रयास करतॅ हैं.
(५)'दयालु' व्यक्ति आशीषित हैं,जो अन्य व्यक्तियों कॅ साथ वैसा ही बर्ताव करते हैं,जैसा वे स्वयं कॅ साथ करतॅ हैं
(६)साफ़ ह्रिदय रखनॅ वालॅ व्यक्ति आशीषित हैं-जो वास्तव मॅं अप्नी कथनी-करनी को सही दिशाओं मॅं लानॅ कॅ प्रयास मॅं लगॅ रहतॅ हैं
(७)'शान्ति की रचना करनॅ वालॅ व्यक्ति आशीषित हैं-वॅ वास्तव मॅं

पर्मेश्वर की सच्ची संतानें कहलानॆ कॆ लायक हैं
(८)वॆ व्यक्ति आशीषित हैं,जो की सही मार्ग पर चलनॆ कॆ कारण दुख और यातना उठाते हैं.

आंटी ग्लैडीस-न की अंकल जौर्ज-हमें आगे का सही मार्ग दर्शातॆ हैं

निष्कर्ष:हम स्वयं वह परिवर्तन बन सकतॆ हैं,जो हम दॆखना चाहते हैं

प्रिष्ठ ३
सही प्रकार सॆ जीवन जीनॆ की कुछ हिदायतें
अब जब यॆशू ने उमडती भीड पर नज़र करी,तब वॆ एक पहाडी पर जा कर बैठ गयॆ,जहां उनकॆ चॆलॆ उनसॆ आकर मिलॆ.उनको संबोधित करते हुए,यॆशू मसीह नॆ ये वचन बोलॆ-
(३)जो व्यक्ति विनम्र आत्मा रखतॆ हैं;वॆ आशीषित हैं,क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं की धरोहर है.
(४)जो व्यक्ति अभी विलाप कर रहॆ हैं;वॆ भी आशीषित हैं,क्योंकि उनको सान्त्वना प्राप्त होगी
(५)विनम्र आत्मा रखनॆ वालॆ व्यक्ति भी आशीषित हैं;
समूची प्रिथ्वी उनकी धरोहर मानी जायॆगी
(६)जो व्यक्ति सही मार्ग कॆ लियॆ भूखे और प्यासॆ हैं,वॆ भी आशीषित हैं क्योंकि उनकी भरपूरी होगी.
(७)दयालु व्यक्ति भी आशीषित होंगॆ,
क्योंकी उनको भी दया दिखलाई जायॆगी
(८)साफ़ ह्रिदय रखनॆ वालॆ व्यक्ति भी आशीषित होंगॆ,

क्योंकि वे पर्मेश्वर से सम्मुख हो सकेंगे
(९)शान्ति कि संरचना करने वाले व्यक्ति भी आशीषित हैं
क्योंकि उनको 'पर्मेश्वर की संतान' की उपाधि दी जायेगी
(१०)वे व्यक्ति भी आशीषित हैं,जिनको सही मार्गों को चुनने के
कारणवश दु:ख और यातना सहनी पड़ती है
स्वर्ग का राज्य उनकी धरोहर है.

मति ५:१-१०

२० अपने शिष्यों को संबोधित करते हुए,उन्होंने कहा:
'आप निर्धन व्यक्ति आशीषित हो
क्योंकि पर्मेश्वर के राज्य पर आपका ही हक़ है.
२१ आपमें से जो व्यक्ति अभी भूखे हो-आप भी अशीषित हो;
आपकी संतुष्टि होगी
आपमें से वे व्यक्ति भी आशीषित हैं,जो अभी विलाप कर रहे हो
क्योंकि एक दिन आपका यह विलाप हंसी में बदल जायेगा
२२ यदि 'मनुष्य के पुत्र' के कारण,आपके नाम को भेए भ्रष्ट माना जाता
है;जब अन्य व्यक्ति आपसे घ्रीणा करते हैं और आपका बहिष्कार करते
हैं
तब ऐसी स्थिति में भी आप वास्तव में आशीषित हैं
२३ उस दिन की प्रतीक्षा में खुशी मनायें और प्रसन्नता से नाच उठें
क्योंकि स्वर्ग में आपके लिये पुरस्कार तैयार है
ऐसे व्यक्तियों के पूर्वजों ने,नबियों के साथ ऐसा ही बर्ताव किया
था.(यानि आप अच्छी संगत में हैं)

२४ परन्तु उन पर हाय,जो अभी धनवान हैं
क्योंकि अप्के सुख-विलास के दिन पूरे हो गये हैं
२५ उन पर भी हाय,जिनके पेट अभी भरे हैं
क्योंकि आप लोग भूखे तड़पोगे
उन पर भी हाय,जो अभी हंसी-ठिठोली में लीन हैं
रोने और विलाप करने का समय आपकी प्रतीक्षा कर रहा है
२६ आप में से उन व्यक्तियों पर भी हाय,जिनके विषय में सभी व्यक्ति भला-चंगा बोलते हैं
क्योंकि ऐसे व्यक्तियों के पूर्वजों ने भि झूठे नबियों की सराहना की थी

प्रिष्ठ ४ लूका ६:२०-२६

सही जीवन जीने की योजना

उसी परिवर्तन को स्वयं में दर्शाऐं,जो आप संसार में देखना चाहते हैं

मैं इस बात से अत्यंत चिन्तित हूं कि गत वर्षों में,धार्मिक उग्रवादियों ने किस प्रकार संसार की कार्यसूची की दिशा ही बदल डाली है.केवल यही नहीं,बल्कि हम में से वे व्यक्ति,जिन्होनें पर्मेश्वर के नाम पर की जाने वाली इस हिंसा का विरोध जताया है-हम किस कदर प्रभावहीन हो गये हैं.
ऐसी बातें देखकर मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि यह मात्र एक भ्रम है कि हम अपने अतिरिक्त किसी भी अन्य व्यक्ति को परिवर्तित कर सकते हैं.सच तो यह है कि हम 'उनको'(अन्य व्यक्तियों) को बदल नहीं

सकते-हम केवल स्वयं को ही बदल सकते हैं.ऐसे विकट समय में शान्ति प्रार्थना के इस वैकल्पिक रूप को स्मरण करने और नियमित रूप से दोहराने की आवश्यक्ता है-

'प्रभु, मुझे उन व्यक्तियों को स्वीकारने की शक्ति दीजिये,जिन्हें मैं बदल नहीं सकता;
उन व्यक्तियों को परिवर्तित करने का साहस प्रदान कीजिये,जिन्हे मैं बदल सकता हूं;
और वह ज्ञान दीजिये,जिससे मैं यह समझ पाऊं कि वह व्यक्ति स्वयं मैं ही हूं!'
परन्तु इस बात का एहसास होते हुए भी कि हम केवल स्वयं को ही बदल सकते हैं,हमारी आकांक्षाएं अक्सर बहुत ऊंची होती हैं.बडे लोग बडी चीज़ें अवश्य कर सकते हैं.परन्तु हम आम लोग केवल अपने मस्तिष्कों में ही 'बडे' हो सकते हैं. वैश्विक संदर्भ में तो हम केवल 'छोटे' ही हैं.और 'छोटे' लोग होने के नाते,हम केवल छोटे पैमाने के कार्य हि कर सकते हैं.इसके बावजूद 'बडे कार्य' किये जा सकते हैं.परन्तु ऐसा 'छोटे' लोगों की असाधारण 'बडी' चीज़ें करने के कारणवश नहीं होगा,बल्कि ऐसा तब होता है,जब हम जैसे अनेक छोटे-मोटे व्यक्ति,वे छोटी-छोटी चीज़ें करने में व्यस्त हो जाते हैं,जिनका मिला-जुला परिणाम विशाल बन पडता है

मात्र 'छोटे' व्यक्ति होने के कारण हम सब जानते हैं कि हम कोई ऐसा महान कार्य नहीं कर सकते,जिससे समूचा संसार परिवर्तित हो जाये.परन्तु इसका यह मतलब बिल्कुल नहीं है कि हम कुछ नहीं कर सकते.हम ऐसी स्थिति में व्यापक परिवर्तन तब ला सकते हैं,यदि हम वे

छोटे-छोटे कार्य,स्वयं,लगन से निरन्तर करते जायें,जिनकी कामना हम अन्य व्यक्तियों से तो करते हैं,परन्तु जिन्हें हम स्वयं नहीं करते.
और जब प्रत्येक देश में,अधिकतर लोग उन 'छोटे-छोटे,परन्तु महत्वपूर्ण कार्यों को स्वयं करते हैं-और जब हम उन्हें अन्य व्यक्तियों पर नहीं छोडते तब यह हमारे स्वार्थी राजनेताओं का निजी हित बन जायेगा कि वे अपनी राजनैतिक उत्तरजीविता के लिये ऐसी नीतियों का विकास करें,जो हमारे संसार के लिये,हमारी अपेक्षाओं को बेहतर प्रतिबिम्बित करें.

योजना 'ए' का अभिप्राय था-अन्य व्यक्तियों से वैसा ही बर्ताव करो,जैसा वे हमारे साथ करते हैं'.सन ९.११.२००१ को ओसामा बिन लादेन ने अमरीकी साम्राज्य के केन्द्र में स्थित,वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर के दोनों टावरों पर हमला बोल दिया था. संसार भर के लोग जब इस चौंका देने वाले द्रिश्य को निहार रहे थे,तब इसी बिन लादेन ने यह कहा था-'यह देखो,अमरीका के इस मुख्य केन्द्र पर पर्मेश्वर ने प्रहार किया है-उसकी सबसे बडी इमारतें नष्ट हो गयीं हैं. प्रतिशोध की ज्वाला में,जौर्ज बुश ने न केवल अफघानिस्तान में छिपे ओसामा बिन लादेन पर धावा बोल दिया,बल्कि इराक़ के नेता,सद्दाम हुस्सैन पर भी(जिसके पास वास्तव में न तो संसारनाशी हथियार थे और न ही जिसका ९/११ हमले में कोई हाथ था;परन्तु जिसका दोष यह था कि उसने गत समय बडे बुश(जौर्ज के पिता) को मारने की कोशिश की थी.
अपनी करतूत के समर्थन में बुश ने वैसे ही पर्मेश्वर के नाम का सहारा लिया जैसे कि ओसामा ने किया था. उसने ऐलान किया,'पर्मेश्वर ने मुझे अल-काएदा पर धावा बोलने का आदेश दिया-जो मैनें किया.फिर उसने

मुझे सद्दाम पर धावा बोलने के निर्देश दिये-वह भी मैने किया.ऐसी सोच के परिणाम्स्वरूप,अब तक १००००० निर्दोश नागरिकों को मौत के घाट उतारा जा चुका है-इनकी संख्या में लगातार व्रिद्धी हो रही है.इस 'आँख के बदले आँख जैसी नीति का परिणाम यह निकला है कि हम सब 'अंधे' बन पडे हैं.स्थायी शान्ति,प्रेम और न्याय की प्राप्ति के लिये जिस प्रकार की चीज़ों की आवश्यक्ता पड्ती है-हम ऐसी नीतियों के तहत न तो ऐसे कार्य कर पाते हैं और न ही उन्हें देख सकते हैं.

योजना 'बी' हमें समझाती है कि हम अन्य व्यक्तियों के संग वैसा हि बर्ताव करें,जैसा कि हम स्वयं के साथ चाहते हैं.सन १९९३ में अमरीका के शिकागो नगर में,विश्व-धर्मों का सम्मेलन हुआ था,जिसमें संसार भर के ८००० से भी अधिक व्यक्तियों ने साथ मिलकर विभिन्न धार्मिक पद्धतियों में उस साझा विचार को खोजने का प्रयास किया था,जो कि हिंसा के मुद्दे को संबोधित करता था,और यह साझा विचार था-'स्वर्ण नियम'.यह वर्तमान काल का नया 'स्वर्ण नियम' नहीं है-'जिसके पास स्वर्ण,यानि सोना है,वही राज्य करेंगे'.परन्तु यह स्वर्ण नियम का वास्तविक,पुराना रूप है,जो यह कहता है-'दूसरों के लिये वही करो,जो आप चाहते हो कि वे आपके लिये करें'.विभिन्न धार्मिक पह्चानों से परे,यह विचार सभी व्यक्तियों को संबोधित करते हुए कहता है,'आप वे परिवर्तन स्वयं बनें,जो आप संसार में देखना चाहते हैं-यानि लोकशक्ति और सत्ताशक्ति कि टक्कर में लोकशक्ति का पलडा भारी करें.
'स्वर्ण नियम' सबसे अनूठा इसलिये भी है कि वह न केवल धार्मिक आस्था वाले व्यक्तियों को भाता है,बल्कि अधार्मिक प्रव्रित्ति के व्यक्तियों में भी उतना हि उत्साह उत्पन्न करता है.आदान-प्रदान का

सिद्धान्त विभिन्न नैतिक परम्पराओं में एक-समान है.परन्तु जहाँ एक ओर 'स्वर्ण नियम' की सशक्तता इस बात में है कि विभिन्न मतों को मानने वाले व्यक्ति इससे समान रूप से सहमत हैं;वहीं,दूसरी ओर इसकी कमज़ोरी यह है कि एक मार्गदर्शक के रूप में यह बहुत स्पष्ट नहीं है. इसी कारण सही रवैयों के विषय पर दिये गये अपने इस उपदेश के संदर्भ में,येशू ने इस 'स्वर्ण नियम'की विशिष्ट विशेषताओं को उजागर करने में इतना समय लगाया.

परन्तु,इसके बावजूद,सच तो यह है कि येशू के सराहकों और शिष्यों,दोनों वर्गों के व्यक्तियों में,ऐसे बहुत कम हैं,जो इन सुझावों को नैतिक निर्देशों के रूप में गंभीरता से लेते हैं.इस स्तिथि के पीछे तीन कारण हैं-

पहला कारण यह है कि इस विषय पर कलीसियाओं मेम बहुत कम शिक्षा दी जाति है.(मेरे मित्र निक का कहना है कि इस विषय पर उसने अब तक अपनी कलीसिया में एक भी उपदेश नहीं सुना है.)जहां कहीं भी 'सही रवैयों' का संदर्भ आया है,वहां इन्हें प्राय: लुभावने,पोस्ट्कार्ड-रूपी आत्मिक आशीषों के रूप में प्रस्तुत किया गया है-
बुनियादी,व्यवहारिक,कार्यरत सिद्धांतों के रूप में नहीं.(यानि वास्तविक जीवन की सच्चाइयों से इन्हें गहरे रूप से जोडा नहीं गया है)

इसके पीछे का दूसरा कारण यह है कि जब से कलीसिया ने स्वयं को राज-सत्ताओं के साथ जोडा है(सम्राट कौन्स्तैन्टीन के समय से),तब से 'सही रवैयों' को नैतिकता के मापदण्डों के रूप में पढाया नहीं गया है.साम्राज्यों की मांग(साम्राज्य की रक्षा में तलवार उठाना)और सही रवैयों में निहित सिद्धान्तों(जैसे कि किसी के थप्पड मारने पर,अपने दूसरे गाल को भी उसके सम्मुख कर देने)की मांगों में इतना विरोधाभास था कि कलीसिया ने 'सही रवैयों' की साम्रज्य के नाम बलि चढा दी.

२ ग्रेग औस्टिन,टौड क्रैनौक,थौर्न ऊमेन,'गौड एण्ड वौर'(पर्मेश्वर और युद्ध;शान्ति अध्ययन का विभाग,ब्रैडकोर्ड २००३
३३३३३ पीटर सिंगर,वन वर्ल्ड टेक्स्त प्रकाशन,मेल्बोर्न २००२

प्रिष्ठ ६
इसके पीछे का तीसरा कारण यह है कि दुर्भाग्यवश,जब कभी पर्वत पर दिये इस उपदेश को व्यवहारिक नैतिकता के एक मुख्य मापदंड के रूप में पुनर्जीवित करने का प्रयास किया है,तब-तब उन्होनें इस उपदेश को ऐसा दुरूह आदर्शवादी रंग दिया है,जिसकी मार्ग्दर्शिकाओं का सामान्य,व्यवहारिक जीवन से दूर का ही संबंध है(जैसे-'कभी क्रोध नहीं करना चाहिये')ऐसे अव्यवहारिक निर्देश येशू को दुरूह बना देते हैं.
मेरी यह मंशा है कि आप यह स्वयं देख पायें कि यह उपदेश,विशेषकर 'सही रवैयों'का संदेश कोरा आदर्शवाद नहीं है-बल्कि ऐसे अभूतपूर्व कल्पना से परिपूर्ण व्यवहारिक आचार-संहिता हैं,जिनकी सही समझ व प्रयोग से हम दरिद्रता और हिंसा से भरे इस संसार से जूझ सकते हैं.
सही रवैये
'सही रवैयों' के संदर्भ में मैं यह सुझाव रखना चाहूंगा कि येशू ने हमारे लिये ऐसे नैतिक,व्यवहारिक मापदण्ड छोडे हैं-जिनके उपयोग द्वारा हम उस परिवर्तन का रूप ले सकते हैं,जो हम संसार में देखना चाहते हैं
आइये,एक क्षण के लिये हम इन 'सही रवैयों' पर कुछ चिंतन करें:
३. विनम्र आत्मा रखने वाले व्यक्ति आशिषित हैं;
क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है
४. रोने और विलाप करने वाले व्यक्तियों को आशीष है;
क्योंकि उन्हें एक दिन सांत्वना प्रदान की जायेगी.

५. विनम्र व्यक्ति आशीष के हक़दार हैं,
क्योंकि वे ही प्रिथ्वी को एक दिन धरोहर के रूप में ग्रहण करेंगे.
६.वे व्यक्ति आशीष के हक़दार हैं,जो सही मार्गों के लिये भूखे-प्यासे हैं;
उनकी एक दिन भरपूरी होगी.
७. दयालु व्यक्ति आशीषित हैम;
क्योंकि उनको भी दया दिखायी जायेगी.
८.साफ़ ह्रिदय रखने वाले व्यक्तियों को आशीष;
क्योंकि वे पर्मेश्वर से सम्मुख हो पायेंगे
९. शान्ति के रचयिताओं को आशीष;
क्योंकि उन्हें हि 'पर्मेश्वर की संतान' कहलाया जायेगा
१०. उन व्यक्तियों पर भी आशीष,जो कि सही मार्गों के अनुसरण के कारण पीडा सहते हैं.
स्वर्ग का राज्य उनकी धरोहर है.

मति ५:३-१०

'सही रवैयों' के आशीषित व्यक्ति कौन-कौन हैं?
(१) दरिद्र या आत्मा में दरिद्र-जो कि दरिद्रों के प्रति अपनी आत्मा में सहानुभूति रखते हैं.
(२) वे जो विलाप करते हैं-जो संसार में व्याप्त अन्याय पर रोते हैं
(३)विनम्र व्यक्ति-जो क्रोधित तो अवश्य होते हैं;परन्तु हिंसात्मक नहीं.

(४)वे व्यक्ति,जो सही मार्गों के लिये भूखे-प्यासे हैं-जो न्याय की खोज में लगे हैं.

(५)दयालु व्यक्ति-जो कि ज़रूरतमंदों की दशा पर सहानुभूति दर्शाते हैं.
(६)स्पष्ट ह्रिदय रखने वाले व्यक्ति-जो कि सही मार्गों को खोजने और उन पर चलने में एकाग्रता दर्शाते हैं.
(७)शान्ति के मार्गों का निर्माण करने वाले व्यक्ति-जो कि युद्ध और हिंसा से ग्रस्त इस संसार में शान्ति स्थापित करने में कार्यरत हैं.
(८)वे व्यक्ति जो सही मार्गों का अनुसरण करने के लिये सताये जाते हैं-जो न्याय की प्राप्ति के लिये पीडा सहते हैं.
निम्नलिखित 'सही रवैयों'में वे कौन सी विशेषताएं हैं,जिन्हें आशीषित किया जा रहा है:
(१)दरिद्र व्यक्तियों की दशा पर ध्यान केन्द्रित करना(धन या सामाजिक दर्ज़े की बजाय).:विनम्रता
(२)संसार मेम व्याप्त अन्याय पर विलाप:सहानुभूति
(३)क्रोधित अवश्य होना;परन्तु हिंसात्मक नहीं: आत्म-संयम
(४)न्याय को खोजना(प्रतिशोध नहीं):सही मार्ग की खोज
(५)सभी ज़रूरतमंंद व्यक्तियों पर सहानुभूति लुटाना: दया-भाव
(६)सही कार्यों को करने में एकाग्रता दर्शाना:एकाग्रता
(७)हिंसा और युद्ध से ग्रस्त संसार के बीच शान्ति स्थापित करने के प्रयास करना:अहिंसा
(८)न्याय-प्राप्ति के उद्देश्यों के लिये दुख उठाना(सब्र दिखाना):सहिष्णुता.
यदि हम इन 'सही रवैयों' की सूची में लिखे गये आशीषित गुणों का अपने जीवन में मार्गदर्शकों के रूप में प्रयोग करें-तब हम निम्नलिखित प्रकार के व्यक्ति बन पायेंगे:
(१)हम अपन आत्मा में दरिद्रों के साथ सहानुभूति की एक पेह्चान स्थापित कर पायेंगे.

(२)तब हम संसार में व्याप्त अन्याय पर विलाप करने वाले व्यक्ति बन पायेंगे.
(३)तब हम क्रोधित अवश्य होंगे,परन्तु हिंसात्मक नहीं.
(४)तब हम ऐसे न्याय करने वाले व्यक्ति बनेंगे,जो अपने दुश्मनों का भी भला चाहते हैं.
(५)तब हुम ज़रूरतमंदों के लिये कुछ करने वाले व्यक्ति बनेंगे.
(६)तब हम एकाग्रता से कार्य करने वाले व्यक्ति बनेंगे;केवल दिखावटी काम करने वाले नहीं.
(७)तब हम हिंसा के बीच,शान्ति के कार्य करने वाले व्यक्ति बनेंगे.
(८)तब हम अन्य व्यक्तियों पर दुख थोपने वाले नहीं,बल्कि खुद पीडा सहन करने वाले व्यक्ति सिद्ध होंगे.
'सही रवैयों'के विषय पर,येशू कुछ स्पष्ट नैतिक मापदंड प्रदान करते हैं,जिनके प्रयोग द्वारा हम 'सत्ता-प्रधान' व्यक्तित्व रखने वाले व्यक्तियों की अपेक्षा 'लोकशक्ति' को उजागर करने वाले व्यक्ति बन पायेंगे.

आगामी आठ भागों में मेरी मंशा है कि हम इन आठों सही रवैयों में से प्रत्येक के बीच में से होकर गुज़रें-जिसके फलस्वरूप आप यह स्वयं देख पायं कि वे आपके जीवन को किस प्रकार परिवर्तित करते हैं.
१. दरिद्र व्यक्ति आशीषित हैं-और वे भी जो उनके प्रति सहानुभूति रखते हैं.

जब कभी हम 'बीऐटीट्यूड्ज़'(आशीषित करने वाले निर्देशों) या आशीषित व्यक्तियों की सूची पर मनन करने की इच्छा करें,तब हम प्राय: मति के रूपान्तर की ओर द्रिष्टि करते हैं(जिसे येशू ने अपने प्रसिद्ध पर्वत पर

दिये संदेश का अंग बनाया था)जैसा कि हम जानते ही हैं,यह रूपान्तर निम्नलिखित शब्दों से प्रारंभ होता है:विनम्र आत्मा वाले व्यक्ति आशीषित हैं,क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है.

परन्तु इस विवादस्पद संदेश के संपूर्ण महत्व को समझने के लिये,हमें लूका के रूपान्तर पर भी द्रिश्टि करनी होगी,जहां ऐसा कहा गया है,'आप दरिद्र व्यक्ति आशीषित हो,क्योंकि पर्मेश्वर का राज्य आपका ही है;परन्तु तुम धनी व्यक्तियों पर हाय,क्योंकि जितना सुख-वैभव तुमको पाना था,तुम पा चुके हो.'(६.२०-२४)

केवल मति के रूपान्तर को पढकर,हममें से अधिकांश व्यक्ति सांत्वना का इसलिये अनुभव करते हैं,क्योंकि हम स्वयं को अक्सर 'दरिद्र'या 'आत्मा में दरिद्र की श्रेणी में रखते हैं.इसी कारण ,इस संदर्भ में बोले गये येशू के आशीष के यह वचन,हमें सांत्वना पहुंचाते हैं.परन्तु यदि आप मेरी तरह हो,और आप लूका के रूपान्तर को पढें,तब निश्चिंत होने की बजाय,आप निश्चय ही विचलित होंगे.सच तो यह है कि हालाँकि हम में से कोई भी यह स्वीकार करना नहीं चाहता कि हम 'धनी' हैं('धनी' केवल वे हैं,जिनके पास हम से अधिक धन है').दिल ही दिल में हम यह जानते हैं कि हम या तो धनी हैं या धनी होना चाहेंगे.इसीलिये,हम येशू के इन वचनों को-विशेषकर 'धनवानों' की भर्त्सना को पढकर विचलित हो जाते हैं;यह एक चुनौतीपूर्ण संदेश है.

जब हम वचन के अन्य अंशों को पढते हैं,तब हमें प्रत्येक मोड पर वही कडा संदेश सुनाई पडता है.येशू की माता,मरियम का यह कहना है,कि अपने पुत्र येशू के माध्यम से,पर्मेश्वर,'भूखों को अच्छी चीज़ों से भर देगा'और धनवानों को 'खाली हाथ लौटा देगा'.(लूका १:५३)

येशू के व्यक्तित्व में,पर्मेश्वर ने 'दरिद्र'का रूप धारण कर लिया(२

कुरिन्थीयों ८:९)और उसने दरिद्रों में सुसमाचार का प्रचार किया.(लूका ४:१८).उसका जन्म एक दरिद्र की कुटिया में हुआ था(लूका २:७)उसके पास 'अपना शीश रखने का भी कोई स्थान नहीं था'.(लूका ९:५८)उनकी जेब में फूटी कौडी तक नहीं थी.जब उन्हें एक समय पर कुछ पैसों की आवश्यकता पडी,तब उनको किसी अन्य व्यक्ति से मदद मांगनी पडी.(मर्कूस १२:१५).वह निरंतर दरिद्र व्यक्तियों से मेलजोल रखता था-बहिष्क्रित व्यक्तियों को अपनाता था और रोगियों को चंगा करता था.(मति ११:४-५) यही नहीं,वह 'दरिद्रों' की साहसी वकालत भी करता था-उसने मन्दिर में अपना डेरा जमाये उन पैसों का हेर-फेर करने वाले व्यक्तियों को भगा दिया था,जिन्होनें निश्चय ही दरिद्रों को उसी प्रकार लूटा था,जैसा उन्होनें शायद येशू के माता-पिता को भी लूटा हो.(मर्कूस ११:१५-१७)

येशू ने न केवल धन-संपत्ति के साथ लगाव की आलोचना की(मति ६:१९)बल्कि कुछ अवसरों पर तो धनियों का उपहास भी उडाया(मति ६:२५-२९)एक धनी निवेशक का द्रिष्टान्त बताते समय उन्होनें उसे 'मूर्ख धनी'की संज्ञा दी.(लूका १२:१६)इस संदर्भ में उन्होनें ये वचन भी बोले,'इसमें कौन सी बडी बात है,यदि समूची दुनिया को प्राप्त करके कोई अपनी आत्मा ही खो बैठे?'(लूका ९:२५)
एक अद्भुत द्रिष्टान्त के माध्यम से येशू ने धनवानों की आत्मा के 'लुप्त' होने के विषय पर अपनी बात सामने रखी.उन्होनें कहा,"एक समय एक धनी व्यक्ति था,जो सदा महेंगे कपडे पहनता था और जिसका प्रत्येक दिन विलास में बीतता था.उसके घर के द्वार पर लाज़रस नामक एक भिखारी बैठता था,जिसका शरीर घावों से भरा था और जो अपनी भूख

मिटाने के लिये उस धनी व्यक्ति की मेज़ से गिरती झूठन तक खाने को तैयार था.उसकी हालत इतनी गयी-गुज़री थी कि कुत्ते भी आ-आ कर उसके घावों को चाटते थे.उसके मरने के बाद,फ़रिश्तों ने उसे इब्राहिम की बगल में बैठा दिया.इसी प्रकार एक दिन धनवान व्यक्ति की भी मौत हो गयी.नरक में,अत्यन्त पीडामयी स्तिथि में,उसने दूर से ही लाज़रस को इब्राहिम की बगल में बैठे देखा.तब उसने यह पुकारा,"पिता इब्राहिम,मुझ पर दया करके,क्रिपया उस लाज़रस को मेरे पास भेजें,ताकि वह पानी में अपनी उंगली को डुबोकर,मेरी जीभ को ठंडक पहुंचाये,क्योंकि मैं इस अग्नि में बुरी तरह झुलस रहा हूं."परन्तु इब्राहिम ने तब यह उत्तर दिया,"पुत्र,यह स्मरण करो कि जहां एक ओर अपने जीवन-काल में तुमने केवल सुख-विलास भोगा था,वहीं लाज़रस ने केवल दुख और यातना ही सही थी;परन्तु अब स्थिति विपरीत हो गयी है-अब उसे सांत्वना मिल रही है;और तुम पीडा में हो."(लूका १६:१९-२५)

यह द्रिष्टान्त,येशू के उस 'उलट-पुलट' समाज के प्रति समर्पण को दर्शाता है,जो उनके जीवन का एक मुख्य मक़सद था.उनको पता था कि एक दिन,पर्मेश्वर ऐसा ही समाज स्थापित करेगा.एक ऐसा समाज,जो हमारे सांसारिक समाज के ठीक विपरीत है-जहां सबसे पहले गिने जाने वाले,आखिर में आते हैं.आउर जिनकी गिनती अभी आखिर में होती है,वे सबसे प्रथम माने जाते हैं.और धनवानों और दरिद्रों के स्थानों का फेर-बदल हो जाता है.यह कथन उस समय के समाज के ठेकेदारों को विचलित कर गया था,कि पर्मेश्वर की मदद के साथ,प्रारंभिक मसीहियों ने येशू के इस सपने को,ऐसी हद तक वास्तविकता में बदल दिया था,जिसकी किसी को अपेक्षा नहीं थी(इफहीसियों ३:२०).स्तिथि ऐसी थी कि उन्होनें निरर्थक माने जानी वाली चीज़ों का ही ऐसा प्रयोग किया,की

'अनमोल' मानी जाने वाली चीज़ें निरर्थक लगने लगीं(यानि वे चीज़ें,जो सत्ताधारियों की नज़र में मूल्यवान थीं).और इस संदर्भ में,बारंबार,'मूर्ख' माने जाने वाले व्यक्तियों ने 'बुद्धिमानों' को धता बता दी और 'कमज़ोर'समझे जाने वाले व्यक्तियों ने 'शक्तिवानों'को पछाड दिया.(१ कुरिंथीयों १:२६).ये सब 'विश्वास' पर आधारित समावेशित और समानता वाले समुदायों को विकसित करने के संदर्भ में और उन धार्मिक परंपराओं के बीच में हुआ,जिन्होनें पहले इन वर्गों को शोषित किया था.वास्तव में,ये व्यक्ति इस कार्य में इस कदर सफ़ल हुए,कि एक अचंभित व्यक्ति ने यह तक कहा,'इन व्यक्तियों ने समूचे संसार को उलट-पुलट कर दिया है'.(प्रेरित:१७:६)

इन कथनों की रौशनी में,यह स्पष्ट है कि किन कारणवश,येशू का सुसंदेश गरीबों के लिये एक 'सुसमाचार' है.दरिद्र व्यक्ति इसलिये आशिषित हैं क्योंकि पर्मेश्वर के राज्य-रूपी,इस 'उलट-पुलट' समाज में,दरिद्रों को वह सम्मान प्राप्त है,जो उन्हें कहीं भी,कभी नहीं मिला है.इसके अतिरिक्त,पर्मेश्वर ने यह भी कहा है कि 'मेरा राज्य इन्हीं व्यक्तियों की धरोहर है'.वे अपनी दरिद्रता के कारण आशिषित नहीं हैं,बल्कि उन्हें इसलिये आशीषित माना गया है,क्योंकि दरिद्र होने के बावजूद उनसे प्रेम किया गया है और इसी कारण,अन्य व्यक्ति अपनी विशाल संपत्ति उनके साथ बांटकर,उनकी मूल आवशयकताओं की पूर्ति कर सकते हैं.जिस समय ऐसे मसीह 'एक ह्रिदय' के थे,तब किसी ने भी यह दावा नहीं किया कि उसकी संपत्ति केवल उसकी है,बल्कि उसे साझे रूप में ज़रूरतमंदों के साथ बाँटा गया था.इसके फलस्वरूप,'उनमें कोई ज़रूरतमंद नहीं बचा था.'(प्रेरित४:३२-३४)

परन्तु,इन सब बातों को सुनने के बाद भी,यह स्पष्ट नहीं है कि येशू का

सुसमाचार,धनवानों के लिये किस प्रकार का सुसमाचार है.जब एक धनवान व्यक्ति ने आकर येशू से यह पूछा कि वह अपनी आत्मा की पुनर्प्राप्ति के लिये,शाश्वत जीवन कैसे पाये,तब येशू ने उसे यह हिदायत दी,'अपनी सारी संपत्ति बेच कर उसे दरिद्रों में बांट दो;फिर आओ और मेरे पीछे हो लो(लूका १८:२२).धनवानों को यह शिकायत अक्सर होती है कि उनके लिये,इस सारी व्यवस्था में क्या रखा है.यह एक वाजिब प्रश्न है-क्योंकि इस व्यवस्था में धनवानों के लिये कुछ नहीं है;यह 'सुसमाचार' तो केवल दरिद्रों के लिये ही प्रतीत होता है-जिनको धनवानों का सब कुछ मिलना है.परन्तु इन वचनों में धनवानों के लिये भी एक 'सुसमाचार' है.वे येशू की इस मांग से कि 'वे अपना सब कुछ बेच कर दरिद्रों में बांट दें'इतने विचलित हैं कि उनको येशू के आगामी शब्द सुनाई नहीं पडते,"और तुम्हें स्वर्ग में धन मिलेगा".परन्तु वे वास्तव में यह कहते हैं(लूका १८:२२) और यही उनका रक्षण है(लूका १८:८-९) दरिद्र व्यक्ति वास्तव में आशीषित हैं,परन्तु वे भी आशीषित हैं,जो दरिद्रों के प्रति सहानुभूति रखते हैं.

२. विलाप करने वाले व्यक्ति आशीषित हैं-जो ज़ोर-ज़ोर से रोते और विलाप करते हैं.

'वॅे आशीषित माने जायेंगे,जो अभी विलाप कर रहॅे हैं;एक समय ऐसा भी आयेगा,जब उन्हें सांत्वना ग्रहण होगी.(मति ५:४)

हालांकि मुझे यूनानी भाषा का गहरा ग्यान नहीं है,परन्तु जानकार व्यक्तियों का यह कहना है कि इस स्थान पर,'विलाप' का भावार्थ समझाते हुए,जिस यूनानी शब्द का प्रयोग हुआ है,वह उस भाषा में पाये जाने वाले सबसे सशक्त शब्दों में से एक है.यह शब्द किसी प्रेमी की

उस गहरे दुख की अभिव्यक्ति करता है,जो उसे अपनी प्रेमिका की म्रित्यू के समय अनुभव होता है-गहरा,दर्दभरा,ह्रिदय-भेदी शोक.
निश्चय ही,संसार में विलाप करने योग्य,काफ़ी मात्रा में,अकाल म्रित्यू विद्यमान है.जहां एक ओर,संसार की आबादी की चोटी के २०% व्यक्तियों के पास संसार की कुल ८०% आय है,वहीं संसार का निचला २०% वर्ग,इसी कुल आय के १.५% से भी कम की प्रतिशत में ही न केवल अपना रो-पिट कर गुज़ारा करता है;बल्कि इस वर्ग का जीवन अभाव के आवर्तनों में बुरी तरह जकडा हुआ है.इस अभाव-ग्रस्त जीवन शैली के ठीक विपरीत,चोटी का २०% वर्ग,वैभव और संपन्नता का जीवन व्यतीत करता है.क्योंकि इस वर्ग के व्यक्तियों की संसार की कुल आय तक न्यायसंगत पहुंच नहीं है,वे अपने श्रम को दो कौडी के मोल पर बेचने को विवश हो जाते हैं.संसार भर में २५ करोड से भी अधिक बच्चे,२५ पैसे प्रतिदिन के मोल पर भी काम करने को विवश हो जाते हैं.विवशता से कमज़ोर पडकर,कई बच्चे अपना देह-व्यापार तक कर बैठते हैं.प्रतिवर्ष दस लाख से भी अधिक बच्चे,देह-व्यापार की बलि चढ जाते हैं.१५ वर्ष से कम के लाखों बच्चे,इसी कारणवश,ऐड्स का शिकार हो रहे हैं.यही नहीं,बल्कि प्रतिवर्ष,प्रति सप्ताह और प्रतिदिन,२५००० से भी अधिक व्यक्ति,बेवजह ही मौत की बलि चढ जाते हैं,जिनका बचाव,सरल प्रकार की सावधानियां बरतने द्वारा किया जा सकता है
परन्तु,वास्तविकता यह भी है कि हालांकि रोने-रुलाने के लिये जहां एक ओर,संसार में इतनी सामग्री विद्यमान है;वहीं दूसरी ओर,ऐसे अनेक व्यक्ति हैं,जिन के दिलों पर संसार की इस दयनीय दशा का कोई प्रभाव ही नहीं पडता.जिन भावनाओं का हम अनुभव करते हैं,वे इस बात पर निर्भर हैं कि हमें क्या दिखायी या सुनाई पडता है;और जो कुछ हमें

दिखायी या सुनाई पडता है,वह इस बात पर निर्भर है कि हम संसार में कहां खडे/बसे हुए हैं.यदि हम संसार के उस उच्च २०% वर्ग के साथ स्वयं को जोडते हैं,जो कि 'हँसता-खेलता और भरपेट भोजन करता दिखाई पडता है(लूका ६:२५),तब शायद हमारी स्वाभाविक प्रतिक्रिया भी इन्हीं के साथ 'हँसने-खेलने की ही होगी'(रोमियों १२:१५) परन्तु हम 'विलाप करने वालों के साथ विलाप'तभी कर सकते हैं,जब हम संसार की आबादी के उस अन्य ८०% वर्ग के साथ,विशेषकर सबसे निचले २०% के साथ सहानुभूति स्थापित करते हैं,जो न केवल 'भूखे पेट सोते हैं,बल्कि विलाप करते हुए,दुख-भरी नींद सोते हैं(लूका ६:२५)

वचन यह दर्शाता है कि हालांकि पर्मेश्वर सभी वर्गों के व्यक्तियों को अपनी देख-रेख में रखता है-निर्धन भी और धनवान भी(उत्पत्ति २६-२७),परन्तु उसके ह्रिदय में उन दरिद्रों के लिये एक विशिष्ट स्थान है,जो जीवन से बुरी मार खाये हुए जीते हैं.(नीति १४:३१).येशू मसीह के रूप में पर्मेश्वर यह स्पष्ट करता है कि उसकी सहानुभूति किस ओर है.उसका वचन है,'जो कुछ भी आप सबसे तिरस्क्रित समझे जाने वाले इन व्यक्तियों के लिये करते हैं-इस श्रेणी में दरिद्र,विकलांग,पीडित और हर प्रकार के तिरस्क्रित वर्ग सम्मलित हैं-वही आप मेरे लिये भी करते हैं(मति २५:४०-४५) पर्मेश्वर कहता है कि जब कभी और जहाँ कहीं भी,आप 'मेरे' लोगों को घ्रिणा से भरा उत्पीडन देते हो,मैं उस उत्पीडन को व्यक्तिगत रूप से लेता हूं.तब मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि आप मुझे उत्पीडन दे रहे हो-और मैं इस बात से अत्यंत दुखी होता हूं.वह कहता है,"जहां मेरे लोग उत्पीडित किये जाते हैं,वहान न केवल मैं स्वयं उत्पीडित होता हूं;बल्कि मैं विलाप करता हूं और भयग्रस्त भी हो जाता हूं."(जेरेमियाह८:२१-२२)

पर्मेश्वर के व्यक्ति होने के नाते,हम पर संसार से उसी प्रकार प्रेम करने की बुलाहट है,जैसा कि पर्मेश्वर स्वयं करता है.संसार की दशा देखकर,वे व्यक्ति जो संसार से पर्मेश्वर समान प्रेम करते हैं,वे विलाप करे बिना रह नहीं सकते. जैसे-जैसे हमारी पर्मेश्वर के प्रति और अपने विलाप करते पडोसियों के प्रति सहानुभूति बढती है,वैसे-वैसे हम 'आपस में गहरे रूप से बाँटे हुए उस दर्द'के अनुभव की ओर अग्रसर होते हैं,जिसे अंग्रेज़ी भाषा में 'कमपैशन' कहते हैं.(लूका १०:२७)

दया-प्रेम के संदर्भ में,येशू हमारे सर्वोच्च उदाहरण हैं;'जब येशू ने भीड पर द्रिष्टि की,तब उसे उन पर दया आ गई-क्योंकि वे लाचार और सताये हुए थे,जैसे कि चरवाह के बिना भेड'.(मति९:३६)

प्रिष्ठ ११

पीडित संसार के प्रति सहानुभूतिपूर्ण प्रतिक्रिया से,'विलाप की तीन आवस्थायें जुडी हुई हैं.

पहली आवस्था 'ज़ोरों से रोना है'-पीडा से ग्रस्त विलाप करना है-या तो पीडित व्यक्ति के रूप में-या उस व्यक्ति के रूप में,जो पीडित व्यक्ति से प्रेम करता है.इसका एक उदाहरण,येशू का मरियम के साथ,उसके भाई लाज़रस की म्रित्यु पर विलाप करना है.मरियम और उसके साथ आये यहूदियों को रोते देखकर,येशू की आत्मा हिल उठी और वह विचलित हो गया.उसने पूछा,'तुमने उसे कहाँ लिटाया है?'उन्होनें उत्तर दिया,"प्रभु,आइये और देखिये.'लाज़रस को म्रित देखकर,'येशू रो पडा'.(यूहन्ना११:३३-३५)

विलाप के पश्चात,दूसरी आवस्था है,'विलाप का विवेचन';पीडा का विवेचन,उसके त्रासदीभरे कारणों का,उसके भयावह परिणामों का विवेचन,ठीक वैसा जैसे भजनसंहिता में सम्मलित स्तुतिगीतों के

रचनाकारों ने किया था.यहां,येशू का विलाप 'येरूशलम' के लिये है.येरूशलम के समीप आते-आते जब उनकी द्रिष्टि नगर पर पडी,तब वे रो पडे और उनके मुख से यह शब्द फूट पडे,"काश! यदि तुम इस दिन यह जानते कि तुम्हारी शांति का मार्ग क्या है;परन्तु अब वह मार्ग तुम्हारी आँखों से ओझल हो गया है."वे दिन अवश्य आयेंगे,जब तुम्हारे शत्रु तुम्हें चारों ओर से घेरकर,तुम्हें और तुम्हारे बच्चों,दोनों को,तुम्हारे ही फाटकों के भीतर,भूमि पर पटक देंगे.ऐसा करते समय,वे एक भी वस्तु नहीं छोडेंगे;केवल इसलिये,क्योंकि तुम पर्मेश्वर के तुम्हारे समीप आने के समय की पहचान नहीं कर पाए."(लूका १९:४१-४४)

इसके उपरांत,तीसरी आवस्था है-'स्वर बुलंद करना';यानि उन गुटों और संगठनों की आलोचना करना,जो समाज में व्याप्त पीडा के दाता हैं-ठीक वैसे ही,जैसे नबियों ने किया था.इसके परिणामवश,जनता,सामाजिक मुद्दों के प्रति जागरूक हो जाती है.मंदिर में बसे व्यापारियों की करतूतों के विरुद्ध,येशू ने आवाज़ बुलंद की.यहूदी पर्व,'पासोवर' के निकट आने पर,येशू,यरूशलम तक गया.मंदिर के आंगनों में,उसने व्यापारियों को भेड,गाय-भैंसें और कबूतर बेचते पाया और अन्य व्यक्तियों को पैसे का आदान-प्रदान करते भी देखा.यह देखकर,उन्होनें रस्सों से एक चाबुक बनाई और उन सब व्यापारियों को और उनकी गाय-भैंसों और भेडों को उस क्षेत्र से दूर भगा दिया.यही नहीं,उन्होनें व्यापारियों के सिक्कोम को तितर-बितर करके,उनकी मेज़ों को उलटा दिया.पक्षी बेचने वाले व्यापारियों को संबोधित करते हुए,उन्होनें कहा,"यहां से दूर भागो.तुम्हारी इतनी हिम्मत कि तुम मेरे पिता के घर को,एक बाज़ार में बदल दो."(यूहन्ना२:१३-१६)

येशू उन व्यक्तियों को आशीषित नहीं करता,जो वर्तमान दशाओं से

संतुष्ट हैं.वह इन दशाओं पर विलाप करने वाले व्यक्तियों को अपनी आशीष देता है.
३.'विनम्र'व्यक्ति आशीषित हैं-जो आत्म-संयम का अनुसरण करते हैं. विनम्र व्यक्तियों को आशीष,क्योंकि प्रिथ्वी की धरोहर उन्हीं की है.(मति५:५)
४.डोरोथी सोएल;'सफरिंग';फोर्ट्रेस प्रेस,फ्हिलाडेल्फिआ,१९७५,प्रिष्ठ ७३

प्रिष्ठ १२
प्राचीन संसार में,जिस समय येशू रहते थे,'विनम्रता' की अवधारणा,इस शब्द के वर्तमान प्रयोग से बहुत भिन्न थी.वर्तमान युग में,'विनम्र'और 'कमज़ोर' शब्द एक-समान माने जाते हैं.हम लोगोन के मस्तिष्कों में यह धारणा बस गई है कि 'विनम्र' व्यक्ति एक कमज़ोर व्यक्ति है,जिसमें साहस नाम की कोई चीज़ नहीं है.अंग्रेज़ी भाषा में,ऐसे साहसहीन व्यक्ति के लिये 'विम्प','वस','गटलेस वन्डर'जैसे शब्दों का प्रयोग भी किया जाता है,परन्तु ईसा मसीह के काल में,'विनम्र'व्यक्ति में एक 'आत्म-नियंत्रित,अंदरूनी शक्ति वाले चरित्र' की विशेषताएं पाए जाने का अंदेशा होता था.यदि ऐसे व्यक्ति के शत्रु,इस विनम्रता को 'कमज़ोरी' समझ बैठते थे,तो यह उनकी भारी भूल मानी जाती थी.
'प्राउस' शब्द;जिसको हम 'विनम्र' अनुवादित करते हैं,इसके दो भिन्न,परन्तु आंतरिक स्तर पर जुडे हुए मायने थे.'प्राउस' शब्द का पहला मायने था,'न बहुत अधिक क्रोधी,न बहुत कम क्रोधी' बल्कि वह व्यक्ति जिसमे सही मात्रा में अन्याय के विरुद्ध क्रोध व्यक्त करने की क्षमता थी;जो किसी भी गलती को संबोधित करने के लिये आवश्यक था.'प्राउस' शब्द का दूसरा मायने,इसके प्रथम मायने से भिन्न,परन्तु आंतरिक स्तर

पर संबंधित था-यह शब्द जंगली घोडों को काबू में लाकर पालतू बनाने की प्रक्रिया के लिये प्रयोग किया जाता था.यानि विशाल मात्रा की विस्फोटक शक्ति को एकजुट करके,उसका सही दिशा में प्रयोग के संदर्भ में यह शब्द इस्तेमाल होता था.

सो जब येशू इस शब्द का प्रयोग करता था,तब उसका अभिप्राय उन व्यक्तियों से था,जो कि हिंसात्मक उत्तेजना के सम्मुख भी एक अहिंसात्मक आत्म-नियंत्रण का प्रयोग करते थे.

क्रुद्ध हो जाने में एक बडा ज़ोखिम है.क्रोधित होने पर हमारी यह पहली प्रतिक्रिया होती है कि हम उन व्यक्तियों पर वापस वार करें,जिन्होंने हमें चोट पहुंचाई है-या उन व्यक्तियों को चोट पहुंचाई है,जिन्हें हम प्यार करते हैं.प्रतिशोध की भावना में,हम उन व्यक्तियों को वैसी ही चोट पहुंचाना चाहते हैं,जैसे उन्होनें हमें या हमारे निकट संबंधियों को पहुंचाई है.प्रतिशोध की अग्नि में,हम न केवल अपने शत्रुओं को भला-बुरा कहते हैं,बल्कि उन्हें अमानवता और शैतानियत का ऐसा प्रतीक भी मान बैठते हैं,जो कि उनको समाप्त कर देने की क्रियाओं का आधार बन जाता है. सन ११.९.२००१,ओसामा बिन लादेन ने,'शैतानी साम्राज्य' के मध्य में स्थित,वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर के दोनों टावरों पर धावा बोल दिया,जिसके परिणामस्वरूप,२००० से भी अधिक निर्दोश अमरीकी नागरिक मौत के घाट उतार दिये गए.हिंसक प्रतिक्रिया के रूप में,जौर्ज बुश ने भी दो-तरफा वार किया-पहले तो उसने अफघानिस्तान पर धावा बोल दिया(जहां ओसामा छिपा हुआ था).दूसरी ओर,उसने 'तानाशाह'सद्दाम हुसैन के देश,इराक पर भी धावा बोल दिया.(वास्तव मेम,इराक के पास न तो जन-संहार के कोई भी हथियार मिले;और न ही सद्दाम का ९/११ के हमले से हि कुछ लेना-देना था.उसका दोष केवल यह था कि एक समय पर

उसने जौर्ज के पिता को मारने की कोशिश की थी.इस नए युद्ध के परिणामस्वरूप,इराक के १००००० से भी अधिक निर्दोष नागरिकों की अकाल मौत हो गयी-और यह मौत का खेल अभी भी जारी है.

क्रोध और उससे उभरता प्रतिशोध,एक इतनी गंभीर चीज़ है कि इस संदर्भ में येशू के बोले इन वचनों से हमें हैरानी नहीं होनी चाहिये,'आपने यह सुना था कि हत्या मत करो;जो कोई भी हत्या का दोषी होगा,उसका न्याय किया जायेगा.परन्तु मैं आपको यह चेतावनी देता हूं कि जो कोई भी अपने भाई से क्रुद्ध होगा,उसका न्याय किया जायेगा.कोई भी व्यक्ति,जो अपने भाई से कहे,'राका'(अर्थात मैं तुझ पर थूकता हूं),उसको न्यायपालिका के सम्मुख लाया जाए. यहां तक कि कोई भी व्यक्ति यदि किसी अन्य व्यक्ति को,'तू बेवकूफ' कह कर बुलाए,तब उसकी नरक की आग में जाने की संभावना बढ सकती है९मति५:२१-२२).हालांकि येशू मसीह ने यह अवश्य कहा है कि अत्यधिक क्रोधित होकर,अन्य व्यक्तियों को भला-बुरा कहने में बहुत ज़ोखिम है;उसका मतलब फिर भी यह कतई नहीं था कि हमें 'कभी क्रोधित नहीं होना चाहिये या कभी किसी को 'मूर्ख' नहिन बुलाना चाहिये.बाइबल इस बात का पर्याप्त प्रमाण देती है कि येशू न केवल स्वयं क्रोधित होता था(मति २१:१२-१७)बल्कि उसने कुछ अवसरों पर फरीसियों को 'मूर्ख' कह कर भी बुलाया था(मति २३:१७) उनके यह वचन व्याख्यात्मक हैं. उन्होनें केवल क्रिया-प्रतिक्रिया के उस हिंसात्मक आवर्तन को दर्शाया है,जिसमें हम फँस सकते हैं-यदि हम इन प्रक्रियाओं में सावधानी न बरतें. एक दूसरे से क्रोधित होकर,एक दूसरे को भला-बुरा कहना सरल होता है.
फुटनोट:विलिअम बार्क्ले;मति का सुसमाचार,संस्करण १,दि डेली स्टडी

बाइबल;दि सेंट ऐंद्रू प्रेस,एडिनबरा १९५६,प्रिष्ठ ९१-२

प्रिष्ठ १३

येशू अपने शिष्यों को यह सीख नहीं देता कि कभी 'क्रोध न करो',बल्कि पौलुस के शब्दों द्वारा वह हमें यह सिखाता है कि 'क्रोधित अवश्य हो,परन्तु उसके वश में आकर पाप न करो'(एफीसियों ४:२६) लाज़रस की मज़ार पर येशू हमें यह दर्शाता है कि हम 'बिना पाप किये'कैसे क्रोधित हो सकते हैं.यूहन्ना हमें यह बताता है कि येशू का अपने मित्र की म्रित्यु के साथ साक्षात्कार होता है,तब वह अपनी 'अंतरात्मा तक हिल जाता है'(यूहन्ना ११:३४-३८) इन शब्दोम का यहूदी भाषा में अनुवाद है-'एम्ब्रीमाओमाई'.इसका मानय है-'आत्मा में फुंकारे लगाना'.यह शब्द किसी जवान घोडे के लिये प्रयोग में लाया जाता है,जो अपनी पिछली टांगों पर खडा होकर,अपने पैरों से हवा को चीरकर,युद्ध में दौडने से पहले फुंकारे लगाता है.इस शब्द के बार-बार प्रयोग द्वारा,यूहन्ना यह बताना चाहता है कि अपने मित्रों की अकाल मौत से येशू अत्यधिक क्रोधित व विचलित हो उठता है;और वह इस विषय पर कुछ कर दिखाने को तत्पर था-बावजूद इसके कि ऐसी स्तिथि में कुछ पाना असंभव दिखता था.परन्तु,ऐसी स्तिथियों मेम भी हम लोगों के आचरण के ठीक विपरीत,येशू ने यह सुनिश्चित किया कि वह अपने क्रोध को सही दिशा में व्यक्त करेगा.क्रुद्ध होकर भी,उसने कोई हिंसक प्रतिक्रिया नहीं की-'उसने बुराई के बदले बुराई नहीं की.'उसने सकारात्मक ढंग से प्रतिक्रिया व्यक्त करके बुराई के बदले अच्छाई करी.'(रोमियों:१२-२१)

हम लोगों के लिये,येशू कि तरह सकारात्मक प्रक्रिया व्यक्त करने का एक ही तरीका है;यदि हम इत्ना आत्म-संयम स्वयं में समेटें,कि बुरे

व्यवहार से साक्षातकार होकर भी,हम हिंसा की बजाए आत्म-संयम से काम लें.इस विषय पर येशू की यह हिदायत है कि आत्म-संयम से परिपूर्ण प्रक्रिया हम निम्नलिखित विधियों द्वारा कर सकते हैं-'अपने दूसरे गाल को भी मारनेवाले के सम्मुख रखकर,'अपने विरोधी के साथ दूसरा मील चलकर; यहां तक कि अन्य व्यक्तियों को 'हमारी पीठ से कमीज़ उतारकर देकर भी.'उनका कहना है,"यदि कोई तुम्हारे दायें गाल पर थप्पड मारता है,तब उसके सम्मुख अपना दूसरा गाल भी कर दो.और यदि,कोई तुम पर मुक़द्दमा दायर करके,तुमसे तुम्हारी कमीज़ भी छीनना चाहता है,तो उसे अपना चोगा भी लेने दो."यदि कोई तुमको उसके साथ एक मील चलने को बाध्य करता है,तब तुम उसके साथ दो मील चलो.जो कोई तुमसे कुछ मांगता है,उसे दे दो;और यदि कोई व्यक्ति आपसे उधार मांगना चाहता है,तब भी उससे बचो मत.'(मति५:४०-४२) येशू यह भी कहते हैं,"अन्य व्यक्तियों से वैसा ही व्यवहार करो,जैसा तुम चाहते हो कि वे तुम्हारे साथ करें(मति७:१२) यानि अन्य व्यक्तियों से वैसा व्यवहार न करो,'जैसा वे आपके साथ करते हैं' या जैसा वे आपके साथ कर सकते हैं;बल्कि ऐसा जैसा आप स्वयं के साथ होना देखना चाहते हैं-भले ही वे वास्तव में आपके साथ वैसा व्यवहार कर रहे हों या नहीं.'आपने अभी तक यह सुना था,"अपने पडोसी से प्रेम करो और अपने शत्रुओं से घ्रिणा करो.परन्तु मैं अब आपको यह हिदायत देता हूं,"अपने शत्रुओं से न केवल प्रेम करो,बल्कि आपको सताने वालों के लिये प्रार्थना करो,ताकि आप अपने स्वर्गीय पिता की संतानें कहलाने के क़ाबिल ठहराए जाओ.पर्मेश्वर अपने सूर्य का प्रकाश,अच्छे और बुरे,दोनों प्रकार के व्यक्तियों को देता है;और अपनी वर्षा,सही और गलत,दोनों रास्तों पर चलने वाले व्यक्तियों पर भेजता है.अत:,वैसे ही संपूर्ण बनो,जैसे तुम्हारे

स्वर्गेय पिता संपूर्ण हैं.(मति५:४४-४८)
येशू यह परामर्श भी देते हैं कि 'विनम्र व्यक्ति आशीषित हैं,क्योंकि प्रिथ्वि उनकी धरोहर है(मति५:४) क्योंकि यदि हम अपनी बहन,ग्लैडिस स्टेंज़ की भाँति विनम्र हैं,और अपने शत्रुओं से भी प्रेम करते हैं,तब इस संसार में हम सब के लिये पर्याप्त स्थान है-हमारे मित्रों के लिये भी और हमारे शत्रुओं के लिये भी.परन्तु,इसके ठीक विपरीत,यदि हम 'विनम्र' नहीं हैं और अपने 'पथभ्रष्ट' भाई,जौर्ज बुश की भाँति अपने शत्रुओं पर बम गिराकर उन्हें प्रिथ्वि से मिटाना चाहते हैं,तब उस स्तिथि में,हमारे लिये,धरोहर के रूप में प्रिथ्वि ही नहीं बचेगी.
४. वे आशीशित हैं,जो 'सही मार्गों' पर चलते हैं;जो अन्य व्यक्तियों के साथ सही आचरण बरतना चाहते हैं.
फुटनोट:६. ग्लेन स्टासेन और डेविड गुशी,'किंग्डम एथिक्स',आई.वी.पी डाउनर्ज़ ग्रोव,२००३,प्रिष्ठ १३४
७.ओज़ गिनिस,'दि डस्ट औफ डेथ',आई.वी.पी,डाउनर्ज़ ग्रोव,१९९३,प्रिष्ठ ३८४

प्रिष्ठ १४
'वे आशीषित हैं,जो सही मर्गों के लिये भूखे-प्यासे हैं;उनकी त्रिप्ति होगी'(मति५:६)
हममें से अनेक व्यक्ति येशू द्वारा 'सही कार्य करने वालों की भूख-प्यास'पर आशीष का यह अर्थ निकालते हैं कि यह उन व्यक्तियों पर आशीष है,जो 'व्यक्तिगत धार्मिकता'की खोज में लगे हैं.परन्तु इस संदर्भ में,येशू उन व्यक्तियों को आशीषित कर रहा है,जो केवल व्यक्तिगत धार्मिकता से संतुष्ट न रहकर,संसार में सामाजिक न्याय की खोज में

लगे हैं.जहाँ एक ओर सामाजिक न्याय,'इस संसार' से जुडा हुआ है,वहीं दूसरी ओर,व्यक्तिगत धार्मिकता,इस संसार की सच्चाईओं से नहीं जूझती.

हममें से वे व्यक्ति,जिन्होनें वचन को गहराई से पढा है-हमारे लिये यह बात आश्चर्यजनक नहीं है कि येशू ने सामाजिक न्याय करने वालों के लिये यह आशीष क्यों दी है.हम जानते हैं कि 'न्याय की खोज'वचन का एक मुख्य विषय है.'न्याय' से संबंधित शब्द,पुराने और नए नियम,दोनों मेम,१००० से भी अधिक बार आते हैं.

येशू के लिये,'न्याय की खोज' की प्रक्रियाओं में पाँच कार्य शामिल हैं-समाज में व्याप्त अन्याय से सामना करना,धनवानों के शोषण से दरिद्रों को मुक्ति दिलाना,शक्तिवानों के शोषण से शक्तिहीनों को मुक्त करान,हिंसात्मक आवर्तनों से लोगों को मुक्ति दिलाना,जिनका सबसे बुरा प्रभाव कमज़ोर वर्गों पर पडता है;और ऐसे न्यायसंगत समुदायों की रचना करना,जिनमें,बहिष्क्रित/तिरस्क्रित व्यक्तियों को समान दर्ज़ा प्राप्त हो.

अनेक व्यक्तियों का यह मानना है कि जहाँ एक ओर,येशू ने 'प्रेम' के विषय पर बहुत कुछ बोला है;वहीं उन्होनें राजनैतिक,आर्थिक और सामाजिक न्याय के विषय में बहुत कम बोला है.परन्तु यह सत्य नहीं है-येशू निरंतर अपने समय के समाज में अन्याय से जूझते पाया गया है.सुसमाचार पत्रों में,मूल रूप से,येशू को,इज़राइल पर होते ज़ुल्मों के संदर्भ में,रोमी और यहूदी अधिकारियों,दोनों का विरोध करते हुए,कम से कम ४० बार पाया गया है

धनवानों द्वारा दरिद्रों के शोषण के संदर्भ में,येशू ने अपने अग्रणीय,यूहन्ना बप्तिस्माकर्ता,का ही अनुसरण किया था.यूहन्ना ने सैनिकों को यह सीख दी थी,"रिश्वत मत खाओ और लोगों पर झूठे

आरोप न थोपो;अपनी पगार में प्रसन्न रहो."उन्होनें कर इकट्ठा करने वालों को भी यही कहा,'केवल उतना ही कर लो,जितने की आवश्यकता है'.इस संदर्भ में उन्होनें कहा,"जिस व्यक्ति के पास पहनने को दो कमीज़ें हैं,उसे उस व्यक्ति के साथ एक बाँट लेनी चाहिये,जिसके पास एक भी नहीं है;और जिसके पास भोजन है,उसे भी वह दरिद्रों के साथ बाँट लेना चाहिये."(लूका ३:११-१४)इसी संदर्भ में,येशू ने,ज़ैकियस नामक एक बदनाम कर एकत्रित करने वाले व्यक्ति को उसकी बुरी आदतों के परिणामों से अवगत कराया.उनसे इस साक्षातकार के पश्चात,ज़ैकियस ने येशू को यह वचन दिया कि 'मैं अपनी पूँजी में से आधा हिस्सा दरिद्रों को दे दूंगा'और यदि मैनें किसी को धोखा दिया है,तो मैं उसे चारगुना वापस भी कर दूंगा.(लूका १९:८)

येशू ने न केवल शक्तिवानों द्वारा शक्तिहीनों के शोषण का निरंतर विरोध किया,बल्कि उसने,आत्मा के सबलीकरण द्वारा,शक्तिहीन व्यक्तियों के गुटों की मुक्ति को भी सक्रिय रूप से प्रोत्साहित किया था.येशू ने उस समय के मुख्य धार्मिक नेताओम को 'पैसे के पुजारी'बुलाकर उनके रवैयों की भर्त्सना की(लूका १६:१४-१५).ऐसे व्यक्ति सार्वजनिक स्थलों में लंबी-लंबी प्रार्थनाएं बोलकर,जहाँ एक ओर पवित्रता का दिखावा करते थे,वहीं दूसरी ओर,'विधवाओं के घरों को हडपते थे'.जब एक दिन,उन्होनें,एक विधवा को,मंदिर की दान-पेटी में अपना सब कुछ डालते देखा,तब उन्होनें यह कहकर मंदिर के अधिकारियों की यह भर्त्सना की कि जिस प्रकार के व्यक्ति की रक्षा के लिये उसे स्थापित किया गया था,वही मंदिर अब ऐसे ही व्यक्ति के आखिरी पैसे खाने में लगा था.(मर्कूस१२:३८-४४)

फुटनोट:८ग्लेन स्टासेन और डेविड गुशी,'किंग्डम

एथिच्स',आई.वी.पी,डाउनर्ज़ ग्रोव,२००३,प्रिष्ठ ३५५
फ्रिष्ठ १५
येशू ने क्षमादान पर,मंदिर का वह एकाधिकार,लोगोम को पवित्रात्मा का बाप्तिस्मा देकर,समाप्त कर दिया.मंदिर की यह प्रथाएं बलि-व्यवस्था पर टिकी हुई थीं.अब आम व्यक्तियों को क्षमादान प्रदान करने का अधिकार दे दिया गया.येशू ने कहा,'पवित्र आत्मा ग्रहण करो और यदि आप किसी के पापों को क्षमा करते हो,तब वे माफ हो जाते हैं.(यूहन्ना२०:२२-२३)
येशू ने ऐसे समुदायों को प्रोत्साहित किया,जिनके नेता,उन पर हुक़ूमत करने की बजाय,उनकी सेवा करते थे.उन्होनें अपने शिष्यों से यह कहा,"तुम जानते ही हो कि गैरविश्वासियों के शासक उन पर प्रभुत्व जमाते हैं;और उनके उच्च अधिकारी उन पर अधिकार जताते हैं.ऐसा,परन्तु,आपके साथ नहीं होना चाहिये.बल्कि,जो कोई आप में से महान बनना चाहता है,उसे आपका सेवक बनना पडेगा;और जो कोई भी अग्रणीय नेता बनना चाहता है,उसे पहले आपका सेवक बनना पडेगा;ठीक उसी तरह,जैसे कि मनुष्य का पुत्र,सेवा करवाने नहीं आया था,बल्कि अन्य व्यक्तियों की सेवा करने आया था-और अन्य व्यक्तियों के लिये अपने प्राण त्यागने आया था.(मति२०:२५-२९)
येशू ने उस सक्रिय,गहरी,बलिदान-भरी अहिंसा की मिसाल पेश की,जो कि आम व्यक्तियों को हिंसात्मक आवर्तनों से मुक्ति दिला सके.हिंसा के आवर्तनों का सबसे बुरा प्रभाव,कमज़ोर वर्गों पर ही पडता है.उन्होनें कहा,"मैं अच्छा चरवाहा हूं,जो कि अपनी भेडों के लिये अपने प्राणों की आहुति भी दे सकता है.भाडे का अगुवा,वह चरवाहा नहीं है,जो भेडों का स्वामी है.ऐसा व्यक्ति जब भेडिए को आता देखता है,तब वह भेड को छोडकर भाग जाता है.इसके बाद,भेडिया भेडों के झुण्ड पर हमला

करके,उसे तितर-बितर कर देता है.ऐसा अगुवा इसलिये भाग खडा उठता है,क्योंकि वह भाडे का टट्टू है,जिसे वास्तव में उन भेडों की कोई परवाह नहीं है;परन्तु मैं वह अच्छा चरवाहा हूं,जो अपनी भेडों के लिये अपने प्राण तक न्यौछावर करने को तैयार है.मुझ से पूर्व,जो भी आये थे,वे चोर और लुटेरे थे.मैं वह फाटक हूं,जिससे कोई भी प्रवेश करने वाले का उद्धार हो सकता है.वह व्यक्ति,मेरे अंदर आकर और फिर बाहर निकलकर,हरे-भरे खेत पायेगा.चोर केवल लूटने और नष्ट करने आता है!मैं इसलिये आया हूं कि इन्हें जीवन मिले-और फलवंत जीवन मिले(यूहन्न १०:८-१८).अपने मित्रों की ओर रुख करके,येशू ने कहा,"इससे विशाल प्रेम नहीं हो सकता-कि कोई अपने मित्रों के लिये अपने प्राण त्याग दे.(यूहन्ना १५:१३)

येशू ने ऐसे समुदायों की रचना करी,जो कि तिरस्क्रित और कमज़ोर वर्गों को न्याय दिलाने के लिये समर्पित थीं.जहाँ एक ओर,यहूदी समाज में,'स्वच्छता' जैसे मूल्य का प्रभुत्व था;वहीं दूसरी ओर,येशू की द्रिष्टि में,'समावेष' अनमोल मूल्य था. जहां एक ओर यहूदी ग़ैर-यहूदियों से नफ़रत करते थे,वहीं येशू ने यह कहा,"मेरा घर सब राष्ट्रों का घर कहलाएगा(मरकूस ११:१७) जहां एक ओर,फरीसी 'पापियों' का बहिष्कार करते थे,वहीं येशू ने इन्हीं वर्गों के व्यक्तियों को अपने भोज में निमंत्रण दिया(मरकूस २:१६).येशू ने कहा,"दावत का निमंत्रण देते समय,अपने मित्रों,भाईयों,बहनों,संबंधियों या धनवान पडोसियों को न बुलाएं.यदि आप ऐसा करते हो,तो वे निश्चय ही आपको वापस निमंत्रण देंगे.परन्तु जब कभी आप लोगों को निमंत्रित करें,तब दरिद्रों,लूले-लंगडों,अंधों,को निमंत्रित करें.ऐसा करने से आपको आशीष मिलेगी.'हालाँकि ये वर्ग आपको वापस निमंत्रित नहीं कर सकते.इस संदर्भ में येशू ने कहा,"आपको सही प्रकार

के व्यक्तियों के पुनर्रुथान पर ईनाम मिलेगा."(लूका १४:१२-१४)
संसार इस बात से निंदित है,कि हालांकि हम में से ऐसे कई व्यक्ति हैं,जो अन्याय देखते तो हैं,परन्तु उसके विषय में चुप रहते हैं.इस संदर्भ मेम येशू का यह वचन है-कि जो व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के साथ न्याय करके,उन्हें आशीषित करते हैं;वे भी स्वयं आशीषित होंगे.
५. दयालु व्यक्ति आशीषित हैं-'जो अन्य व्यक्तियों से वैसा ही बर्ताव करते हैं,जैसा वे अपनी ओर दर्शाते हैं'.
दयालु व्यक्ति आशीषित हैं,क्योंकि उनके भी दया दिखलाई जायेगी(मति ५:७)

हालाँकि येशू न्याय खोजने वाले व्यक्तियों को आशीष देता है,परन्तु वह यह भी बताता है के सच्चा न्याय,दया-भावना से परिपूर्ण होना चाहिये.जहां तक येशू का प्रश्न है,हमारे लिये अन्य व्यक्तियों को न्याय दिलाना तब तक असंभव है,जब तक हम यह नहीं भाँप लेते कि हमारी आवश्यकता के समय में,हम किस प्रकार की सहायता की अपेक्षा रखते हैं.
येशू की द्रिष्टि में,संपूर्ण पवित्र वचनों में लिखे सभी नियमों का;और सभी नबियों के मुख से निकले वचनों का सारांश,दो निर्देशों में समेटा गया है.वे निर्देश हैं-'अपने पडोसी से वैसा ही प्रेम करो,जैसा आप स्वयं से करते हैं(मति २२:३९) अत: सच्ची धार्मिकता का अर्थ है कि'आप अन्य व्यक्तियों के साथ वैसा ही बर्ताव करें,जैसा आप स्वयं के साथ होना देखना चाहते हैं.(मति ७:१२)
इस सत्य के प्रकाश में,यह कोई आश्चर्यजनक बात नहीम है कि हम इस

'दया के नियम' को लगभग सभी मुख्य धर्मों मेम,किसी न किसी रूप में पाते हैं

दया-नियम:विभिन्न धर्मों में:

हिंदू मत: कभी दूसरे व्यक्तियों के साथ वह व्यवहार न करो,जो आपको दुख पहुंचाए:पंचतंत्र३:१०४

बौद्ध मत:अन्य व्यक्तियों को वैसा न दुख पहुंचाओ,जो खुद आपको दुख पहुंचाता हो:उदाना ५:१८

परसी मत:अन्य व्यक्तियों से वैसा बर्ताव न करो,जो आपके स्वयं के लिये सही न हो:शायस्त-ना-शायस्त १३:२९

जैन मत: जो व्यक्ति अपने पर्यावरण की ओर ध्यान नहीं देता,वह अपने जीवन का तिरस्कार करता है: महावीर

कन्फ़्यूशी मत: अन्य व्यक्तियों पर वह बोझ न थोपो,जो आप स्वयं के ऊपर नहीं चाहते हैं:ऐनालेक्ट १२:२

ताओ मत:'अपने पडोसी की लाभ-हानि को अपना ही समझो':ताई-शांग-कान-मिंग-पीएन

बहाई मत:किसी अन्य व्यक्ति के लिये वह न सोचो,जो आप स्वयं के साथ नहीं चाहते हैं:बहाउल्लाह ६०

यहूदी मत: अपने पडोसी के साथ वह न करें,जो आप स्वयं के साथ होते नहीं देखना चाहते हैं:तालमुद,शब्बत,३१ए

मसीही मत:अन्य व्यक्तियों के साथ वैसा ही बर्ताव करें,जैसा आप चाहते हैं कि वे आपके साथ करें:मति ७:१२

इस्लाम:अन्य व्यक्तियों के साथ वैसा बर्ताव करें,जैसा आप चाहते हैं कि आपके साथ हो:मिरकत-अल-मसाबीह

सिख मत:अन्य व्यक्तियों से वैसा बर्ताव करें,जैसा आप स्वयं के साथ

होते देखना चाहते हैं:आदि-ग्रंथ
ताओ मत में,दया का नियम,व्याख्यात्मक है,'अपने पडोसी की लाभ-हानि को अपना ही समझिये'.जैन मत में यह बुलाहट निर्देशपूर्ण है-'जो अपने वातावरण की अवहेलना करता है,वह व्यक्ति अपने ही जीवन-आधार की भी अवहेलना करता है.हिंदू,बौद्ध,पारसी,कन्फ़्यूशीय,यहूदी और बहाई मतों में,दया का यह नियम,नकारात्मक शब्दों में पेश किया गया है:"अन्य व्यक्तियों के साथ वैसा व्यवहार न करो,जो आपको दुख पहुंचाए.'अन्य व्यक्तियों को उन बातों/कारनामों से चोट न पहुंचाएं,जो आपको स्वयं चोट पहुंचाता हो."जिस बात से आप स्वयं घ्रिणा करते हैं,वह अपने पडोसियों के साथ न करें."अन्य व्यक्तियों पर वह न थोपें,जिसकी आप स्वयं कामना नहीं करते' 'जो चीज़ें आप स्वयं के लिये नहीं चाहते,वे अन्य व्यक्तियों के साथ न करें.'मसीहत,इस्लाम और सिख मतों में,दया के नियम को,साकारात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है:'अन्य व्यक्तियों के साथ वैसा बर्ताव करें,जैसा आप स्वयं के साथ होता देखना चाहते हैं.'अन्य व्यक्तियोम के साथ वैसा बर्ताव करें,जैसा आप चाहते हैं कि वे आपके साथ करें."अन्य व्यक्तियों से वैसा पेश आएं,जैसा आप चाहते हैं कि वे आपके साथ आयें.'सभी मतों को-या किसी भी मत को न माननेवाले सभी व्यक्ति यह जानते हैं,कि न्याय पाने के मार्ग पर,दया के नियम का अनुसरण करने के अतिरिक्त कोई अन्य मार्ग नहीं है."अन्य व्यक्तियों के साथ वैसा व्यवहार करना जैसा हम स्वयं के साथ होना देखना चाहते हैं एक अनिवार्य बात है.
सहानुभूति,दया का केंद्र है.सहानुभूति अन्य व्यक्तियों के दिलों में उतरकर,उनकी भावनाओं को भाँपना है.यह संभावित पीडित व्यक्तियों,जो खतरे या संकट में हैं;उनके साथ सहानुभूति रखने की भावना है.जब हम

वह अनुभव करते हैं,जो वे करते हैं,तब हमें उन्हें बेवजह दुख न पहुंचाने की प्रेरणा मिलती है.यहाँ तक कि हम उनको येशू-समान सहायता तक पहुंचाने को प्रेरित हो सकते हैं.

प्रिष्ठ १७

एक दिन जब येशू शिक्षा बाँट रहे थे,तब एक उपद्रवी भीड एक ऐसी महिला को खींचते हुए उनके पास ले आयी,जो किसी से अवैध संबंध रखते हुए,रंगे हाथों पकडी गई थी.इस भीड की इच्छा थी कि येशू उसका न्याय करे.यहूदी कानून के अनुसार,यदि यह महिला व्यभिचारिणी सिद्ध होती,तो इसका दण्ड,उसे पत्थर मारकर,मौत के घाट,उतार देना था.येशू यह सार्वजनिक रूप से शिक्षा दे चुके थे,कि वे व्यभिचार के बिल्कुल विरुद्ध थे.सच तो यह था कि अपने कथनों में येशू,यहूदी कानून से भी कहीं आगे निकल गए थे.जब उन्होनें यह घोषणा करी थी,कि यदि कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के साथ व्यभिचारी संबंध रखने का सोचता भी हो,तो वह अपने दिल में व्यभिचार का दोषी था.सो,जब इस महिला को व्यभिचार करते हुए,रंगे हाथों पकडा गया था,तब ऐसा प्रतीत हुआ था कि यह तो बहुत सरल,स्पष्ट मामला है,जिसका निबटारा तुरंत हो जायेगा.इस महिला को व्यभिचार की क्रिया में पकडा गया था.यहूदी कानून इस पाप के लिये महिला को पत्थर मारकर,मार गिराने की सज़ा सुनाता था.निश्चय ही यह अपेक्षा की जा रही थी,कि येशू न केवल महिला को व्यभिचार के लिये,दोषी ठहराएगा,बल्कि उसको मौत की सज़ा भी सुनाएगा.(यूहन्ना८:१-६)

इस मामले में स्वयं को घिरा पाकर,येशू ने यह कहा,"इस महिला पर पहले वह व्यक्ति पत्थर फेंके,जो निष्पाप हो'.फिर रूककर,उसने अपनी उंगली से भूमि की मिट्टी पर कुछ लिखा और महिला के न्याय की

ज़िम्मेदारी,उस भीड पर छोड दी,जो उस महिला के खून की प्यासी थी.(यूहन्ना८:७-८).भीड के पुरुष अपने निर्णय पर पहुंच गए.एक-एक करके,बडे-जवान,सभी तितर-बितर हो गए.महिला अब येशू के साथ अकेली रह गयी.उसने पूछा,"क्या किसी ने तुम्हारी भर्त्सना नहीं की?" महिला ने उत्तर दिया,"नहीं,किसी ने नहीं."तब येशू ने उसे अपना निर्णय सुनाया,"मैं भी तुम्हें निंदा से मुक्त करता हूँ.परन्तु ऐसा तुम फिर न करना."(यूहन्ना८:९-११).जहां एक ओर,येशू,लोगों को स्वयं निर्णय लेने को प्रेरित करते थे,वहीं पर वे यह हिदायत भी देते थे,कि निर्णय लेते समय सहानुभूति बरती जाए.

जब उनके शिष्यों ने एक बार उनसे यह पूछा कि उनके अन्य व्यक्तियों को कितनी बार क्षमा दर्शानी चाहिये,तब येशू का यह उत्तर था,"यदि तुम्हारे भाई/बहन तुम्हारे विरुद्ध कोई पाप करते हैं,तो उन्हें उसकी उचित ताडना दो.यदि वे अपना गुनाह स्वीकार कर लेते हैं,तब उन्हें माफ कर दो.यदि वे दिन में सात बार वापस आकर,तुमसे अपने गुनाह की क्षमा माँगते हैं,तब उन्हें सातों बार क्षमा कर दो."(लूका १७:३-४).किसी अन्य अवसर पर,इस संदर्भ में,तो उन्होनें यहां तक कहा,"केवल सात बार ही नहीं,सत्तर गुना सात बार."(मति८:२२) और जब शिष्यों ने उनसे यह पूछा कि लगातार अन्य व्यक्तियों को क्षमा क्यों करते जाएँ,तब येशू का उत्तर था,"यदि आप अन्य व्यक्तियों को उनके पाप क्षमा करोगे,तब आपके स्वर्गीय पिता भी आपको क्षमा कर देंगे.परन्तु यदि आप अन्य व्यक्तियों के पाप क्षमा नहीं करोगे,तब आपको भी स्वर्गीय पिता से क्षमा नहीं मिलेगी."(मति६:१४-१५)
जब कभी हमारा व्यभिचार या नशीले पदार्थों के प्रयोग द्वारा उत्पन्न

एच.आई.वी/एड्स जैसे रोगों से साक्षात्कार होता है,तब ऐसे रोगियों को,बिना दया दर्शाए,उन्हीं पर सारा दोष थोपकर,उनसे परे हो जाना,बडा सरल होता है.परन्तु जेम्ज़ के शब्दों में,यदि हम अन्य व्यक्तियों को दया दिखाने में असमर्थ हैं,तब हमें भी किसी से दया की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए.उनका यह कहना था,"जो कोई दयालु प्रव्रित्ति नहीं दर्शाता,उसका भी बिना दया के न्याय किया जायेगा."(जेम्ज़२:१३)

येशू ने यह स्पष्ट कहा है,"दयालु व्यक्ति आशीषित होंगे,क्योंकि उनको भी दया दिखलाई जाएगी."(मति५:७)

६.'साफ ह्रिदय रखने वाले व्यक्ति-जो अपनी कथनी-करनी की जडों को साफ करते हैं;वे भी आशीषित हैं'.

प्रिष्ठ १८

साफ ह्रिदय रखने वाले व्यक्ति आशीषित हैं;क्योंकि उनको पर्मेश्वर के दर्शन होंगे(मति५:८)

येशू मसीह लोगों को 'सही प्रकार के कार्य'करने वाले बनने के लिये प्रोत्साहित करते थे(मति५:६).वास्तव में,वे निरंतर आम जनता को फरीसियों से भी अधिक 'सही' होने की चुनौती देते थे.फरीसी उस समय के सबसे 'सही' रास्ते पर चलने वाले माने जाते थे.(मति५:२०)येशू की द्रिष्टि में,फरीसियों के साथ समस्या यह थी कि वे 'प्याले को बाहर से ही साफ करते थे,परन्तु अंदर वे बुराईयों से भरे हुए थे(लूका ११:३९)येशू लोगों को 'ह्रिदय से साफ होने की सलाह देते थे.(मति५:८)

'साफ ह्रिदय' के लिये येशू ने 'कैथरौस' शब्द का प्रयोग किया था,जिसका मायने 'घुनी हुई गेहूं और अदूषित दाखरस'था.इन शब्दों का अभिप्राय उस मानसिक दशा से है,जिसमें किसी कार्य के पीछे मिश्रित उद्देश्य नहीं होते.येशू का यह कहना था कि अपने 'प्याले को अंदर से साफ करना'

किसी भी उस व्यक्ति के लिये अनिवार्य है,जो सही मार्गों पर चलने का प्रत्याशी है(मति२३:२६)."वैसे ही सम्पूर्ण बनो,"उन्होनें कहा,"जैसे तुम्हारे स्वर्गीय पिता सम्पूर्ण हैं.(मति५:४८)

येशू की अपेक्षाओं से सामना करने पर,येशू के शिष्यों के मन में यह प्रश्न अवश्य उठेगा कि येशू की अपेक्षाओं के अनुरूप,'हम अपने ह्रिदयों को इस कदर कैसे साफ कर सकते हैं,जिसके फलस्वरूप हम 'सम्पूर्ण' कहलाए जा सकें.

मेरे विचार में,इस प्रश्न का कम-से-कम आंशिक उत्तर इस में है की,येशू की द्रिष्टि में,'सम्पूर्ण' शब्द का क्या मायने है.जिस शब्द का यहाँ प्रयोग हुआ है,वह है 'तेलिऔस',जो कि 'तेलौस' सन्ग्या पर आधारित है.इसका मतलब है-'मक़सद'.सो,यह स्पष्ट है कि येशू की द्रिष्टि में,'सम्पूर्ण' शब्द का अभिप्राय,हमारी व्यक्तिगत संभावनाओं की सफल प्राप्ति से है.हम सब पर्मेश्वर की प्रतिमा के रूप में रचे हैं,ताकि हम पर्मेश्वर के प्रेम को,सही ढंग से अपने जीवन में दर्शा सकें.येशू की द्रिष्टि में,'सम्पूर्ण'बनने का अभिप्राय,पर्मेश्वर के प्रेम के प्रकाश को हमारे जीवन में इस कदर चमकने देना है-जिससे अन्य लोग हमारे 'अच्छे कार्यों' को देखकर,हमारे स्वर्गीय पिता की महिमा कर सकें.(मति५:१६)

यह स्पष्ट है कि येशू की हमसे जो अपेक्षाएं हैं,वे बिल्कुल 'बेदाग' या पवित्र होने से उतनी संबंधित नहीं हैं;बल्कि इस बात से जुडी हुई हैं कि हममें कितनी एकाग्रता पनप पाई है.परन्तु अभी भी यह बात इतनी स्पष्ट नहीं हुई है कि हम ऐसी 'एकाग्रता' को अपने वास्तविक जीवन में कैसे और किस हद तक उतार सकते हैं.

अधिकतर मसीही विद्वान इस बात पर सहमत हैं कि इस अहम प्रश्न का कम-से-कम आंशिक उत्तर,'शिष्यता' की अवधारणा में है-यानि स्वामी

के कदमों पर,शिष्य का चलना और ऐसा करने की प्रक्रिया में उसके गुणों को अपने चरित्र में उतरने देना.येशू का अनुसरण करने में हम उन विशेषताओं और गुणों को स्वयं में उतार सकते हैं,जो उनके व्यक्तित्व में निहित हैं.

पर्वत पर दिये संदेश में,जिन विशेषताओं की ओर,येशू ने इशारा किया था-उनमें निम्नलिखित शामिल हैं-विनम्रता,सहानुभूति,आत्म-नियंत्रण,सही मार्गों पर चलने की इच्छा,दया,एकाग्रता,अहिंसा और सहिष्णुता.डैलस विलर्ड जैसे मसीही विद्वानों का मानना है कि पर्वत पर दिये संदेश में येशू यह निर्देश दे रहे थे,कि उनके चारित्रिक गुणों को स्वयं में उतारने के लिये,यह आवश्यक था कि उनके चेले,उनके 'उच्च आदर्शों'और उस समय के समाज के 'निचले आदर्शों'का भेद समझकर,समाज के निचले आदर्शों की बजाय,येशू के उच्च आदर्श का अनुसरण करें

अत:,विलर्ड का यह कहना है कि येशू उस समय के समाज के 'कोई खून न करने' के आदर्श की अपेक्षा,'क्रोधित न हो' आदर्श को अपने शिष्यों के लिये पेश करते हैं

यहूदी परंपरा का 'निचला' आदर्श:'आपने सुना था कि बहुत पहले,लोगों से यह कहा गया था,'हत्या मत करो.जो कोई भी हत्या करेगा,उसका न्याय होगा'.(५:२१)

येशू की बुलाहट का 'उच्च आदर्श':'परन्तु मैं तुम्हें अब यह कहता हूं कि जो कोई भी अपने भाई या बहन के साथ क्रोधित है,उसका न्याय किया जायेगा.उदाहरण:कोई भी यदि अपने भाई या बहन को 'ओ मूर्ख' कहकर बुलाता है,उसको न्यायालय के सम्मुख लाना चाहिये.कोई भी यदि किसि को 'तू मूर्ख'कहेगा,उसकी नरक की आग में जलने की संभावना

होगी.(५:२२)
परन्तु इस द्रिष्टिकोण के साथ समस्या यह है कि यहाँ जिस 'उच्च आदर्श' की वक़ालत की जा रही है,वह वास्तविकता से बिक्कुल परे है;'कभी क्रोधित न होने' का उच्च आदर्श,बाइबल के अनुरूप ही नहीं है;क्योंकि वह वास्तविकता से बिल्कुल परे है.वचन में जिन किन्हीं महान उदाहरणों का उल्लेख हुआ है(येशू सहित),उनमें से किसी ने भी 'कभी क्रोधित न होने' के सिद्धान्त का अनुसरण नहीं किया था.येशू न केवल,कुछ अवसरों पर क्रोधित हुआ था(मति२१:१२-१७),उसने अपने कुछ विरोधियों को 'मूर्ख' कहकर भी बुलाया था.(मति २३:१७)
ग्लेन स्टासेन और डेविड गुशी जैसे मसीही विद्वान मानते हैं कि जहाँ डैलस विलर्ड जैसे संत प्रव्रित्ति के मसीही विद्वान इस बात पर खरे थे कि येशू ने पर्वत पर दिये संदेश में येशू के 'उच्च आदर्शों'और समाज के निम्न आदर्शोंम के विषय पर क्या कहने का प्रयत्न किया था;वहीं वे उन 'उच्च आदर्शों' के विषय पर ही भ्रमित थे.उन्होनें अवास्तविक आदर्शोंम को 'उच्च आदर्श' कहलाकर प्रस्तुत किया है,जिनकी येशू ने कभी वक़ालत ही नहीं की थी.यही नहीं,हम मे से जिस किसी ने इन अवास्तविक आदर्शों को,'सुसमाचार' के नाम पर अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न किया है,उनको गहरी निराशा ही हाथ लगी है.
जब हम ध्यानपूर्वक,पर्वत पर दिये संदेश को पढते हैं,तब हम वास्तव में,यह पाते हैं कि जब कभी येशू समाज के आदर्शों की अपने आदर्शों के साथ तुलना करता है,तब वह अपने 'उच्च आदर्शों' को समाज के निचले आदर्शों से पहले नहीं,बल्कि बाद में प्रस्तुत करता है.समाज की असुलझी समस्याओं के आवर्तन,उनकी द्रिष्टि में पहले स्थान पर आते हैं.समाज के 'निम्न आदर्श'उन समस्याओं से जूझने में असमर्थ हैं.उनके सुलझाने

के लिये येशू के 'उच्च आदर्शों' की आवश्यकता है.येशू के 'उच्च आदर्श'वास्तविक जीवन से जुडे,अत्यंत स्रिजनात्मक परिवर्तन लाने वाली पहलें हैं,जो उनकी तीसरी श्रेणी के व्यक्तव्यों में पाए जाते हैं.
पारंपरिक प्रथाएं:तुमने बहुत पहले यह सुना था,'कभी हत्या न करो' जो कोई हत्या करेगा,उसका न्याय किया जायेगा.'५:२१
चक्रव्यूही आवर्तन:परन्तु मैं तुम्हें यह बताता हऊं कि जो कोई भी अपने भाई/बहन से क्रोधित है,उसके न्याय के अधीन आने की संभावना है.जो कोई भी अपने भई(या बहन) को 'मूर्ख' बुलाता है,उसको न्यायाधीश के सम्मुख लाया जाना चाहिये;और जो कोई भी उन्हें 'मूर्ख' बुलाता है,उसके नरक में प्रवेश करने की संभावना है.
परिवर्तन प्रदान करने वाली पहलें:अत: वेदी पर भेंट चढाते समय,आपको यह स्मरण हो कि आपके भाई(या बहन) के दिल में आपके प्रति रंज है,तब तुरंत वेदी पर अपनी भेंट छोडकर,पहले अपने भाई(या बहन) से सुलह कर लो;तब उसके पश्चात वेदी पर अपनी भेंट चढाएं.यदि आपका विरोधी आपको अदालत तक घसीट रहा है,तब उसके साथ तुरन्त सुलह करने का प्रयत्न करें.५:२३-२६
प्रिष्ट २०
यहां पर यह स्पष्ट है कि इस स्थान पर,दूसरी बात की बजाय,तीसरी बात पर बल दिया गया है.जिस निर्देश को हमें अपने ह्रिदय में उतारना है,वह एक वास्तविक 'कभी क्रोध न करो' की नीति नहीं,बल्कि द्वन्द के समाधान के प्रति एक स्रिजनात्मक प्रतिक्रिया है.
पर्वत पर दिए गए संदेश के निर्देशों के अनुसार,यदि हम साफ ह्रिदय के व्यक्ति होने की इच्छा रखते हैं-तब उस स्थिति में हमें पहली श्रेणी की बात पर ग़ौर करना होगा;दूसरी श्रेणी की बातों पर मनन करना

होगा;परन्तु कदम उठाने के लिये हमें येशू द्वारा कथित,तीसरी श्रेणी की बातों पर कार्य्शील होना होगा.

पारम्परिक प्रथाएं:१.हत्या मत करो

१.चक्रव्यूही आवर्तन:परन्तु क्रोध के आवेश में होने के कारण,आप न केवल गाली-गलौज कर सकते हैं,बल्कि हिंसा का प्रयोग भी कर सकते हैं.

१. परिवर्तन प्रदान करने वाली पहलें: जाईए,अपने विरोधी से सुलह कर लीजिये

२.पारंपरिक प्रथाएं:व्यभिचार न करें

२.चक्रव्यूही आवर्तन:पर्न्तु ह्रिदय में धधकती व्यभिचार की ज्वाला,व्यभिचार के ही समान है

२.परिवर्तन प्रदान करनेवाली पहलें:सो,ज्वाला के स्रोत से हि स्वयं को दूर कर लें(मरकूस ९:४३-५०)

३.पारम्परिक प्रथाएं:आप तलाक दे सकते हैं

३.चक्रव्यूही आवर्तन:परन्तु व्यभिचार,प्राय:,तलाक का कारण होता है

३ परिवर्तन प्रदान करने वाली पहलें:अत:,सुलह कर लें.(१ कुरिन्थिओं७-११)

४. पारम्परिक प्रथाएं:झूठी कसमें न खाएं

४. चक्रव्यूही आवर्तन:परन्तु कोई भी शपथ लेना,झूठे दावों का अंदेशा है

४परिवर्तन प्रदान करने वाली पहलें:'आपकी हाँ,हाँ हो और ना 'ना'

५.पारम्परिक प्रथाएं:'आँख के बदले आंख लो;और दाँत के बदले दाँत

५.चक्रव्यूही आवर्तन:परन्तु प्रतिशोध लेना,बुराई के बदले बुराई करना है

५.परिवर्तन प्रदान करने वाली प्रथाएं: अत: अपना दूसरा गाल भी अपने विरोधी के सम्मुख कर दीजिये

६.पारम्परिक प्रथाएं:अपने पडोसी से प्रेम करो और अपने शत्रुओं से घ्रिणा करो

६.चक्रव्यूही आवर्तन:परन्तु शत्रुओं से घ्रिणा करने से,घ्रिणा के स्रोत से जूझा नहीं जाता

६.परिवर्तन प्रदान.....:अत: अपने शत्रुओं से भी प्रेम करो;और उनको आशीष दो

७.पारम्परिक...:सार्वजनिक रूप से दान देने की नीति

७.चक्रव्यूही:यह मात्र एक दिखावा है;दयालुता का उदाहरण नहीं

७.परिवर्तन प्रदान...:दान देते समय,उसको विग्यापित न करो

८.पारम्परिक...:सार्वजनिक व्रत रखना

८.चक्रव्यूही...:यह भी मात्र धार्मिकता का दिखावा है;सच्ची धार्मिकता नहीं

८.परिवर्तन प्रदान....:उपवास करते समय,उसकी घोषणा न करो

९.पारम्परिक...:सार्वजनिक प्रार्थना

९.चक्रव्यूही...:यह भी मात्र दिखावा है;सच्ची धार्मिकता नहीं

९.परिवर्तन प्रदान...:प्रार्थना सच्चे दिल से,एकांत में करो

१०.पार्म्परिक...:बहुत सारी प्रार्थना

१०.चक्रव्यूही...:यह केवल कोरे मंत्रों का जाप बन कर रह सकती है.

१०.परिवर्तन प्रदान...:प्रभु की प्रार्थना को अपने ह्रिदय की प्रार्थना बनएं

११.पारम्परिक...:प्रिथ्वि पर अपनी पूंजी जमा करते रहना(लूका१२:१६-३१)

११.चक्रव्यूही...:परन्तु यहाँ पर चोर-लूटेरे घर के भीतर घुस कर चोरी कर लेते हैं.

११.परिवर्तन प्रदान...:स्वर्ग में धन-संपत्ति प्राप्त करने की लालसा रखो

१२.पारम्परिक...:कोई भी व्यक्ति,दो अलग-अलग स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता

१२.चक्रव्यूही...:एक ही समय पर,पर्मेश्वर और धन की सेवा करना असंभव है
१२.परिवर्तन प्रदान...:अत:,पर्मेश्वर के राज्य की खोज में लगो;और धन की चिंता न करो

१०.ग्लेन स्टासेन और देविड गुशी,'किंग्डम एथिक्स',आई.वी.पी,दाउनर्ज़ ग्रोव,२००३,प्रिष्ठ १३५
प्रिष्ठ २१
१३.पारम्परिक...:किसी अन्य व्यक्ति का न्याय न करो,क्योंकि ऐसा करने से तुम्हारा ही न्याय होगा
१३.चक्रव्यूही...:यदि तुम अन्य व्यक्तियों का न्याय करोगे,तब तुम्हारा भी उन्हीं मापदंडों द्वारा न्याय किया जायेगा.
१३.परिवर्तन प्रदान...:पहले तो अपनी आँख से फट्टा निकालें;फिर अपने पडोसी की आँख से धूल निकालाना
१४.पारम्परिक....:सुअरों के सामने अपने हीरे न फेंको
१४.चक्रव्यूही..:'वे केवल उन्हें अपने पैरों तले रौंदकर,आपको ही चीर डालेंगे
१४.परिवर्तन प्रदान...:यदि आपको समर्पण करना है,तब आप स्वयं को एक की ही हवाले कर सकते हैं-पर्मेश्वर के

येशू का कहना है कि जो कोई व्यक्ति उनकी इन आदर्शवादी-परन्तु-वास्तविक पहलों का अनुसरण करके,अपने ह्रिदय को साफ करता है,वह पर्मेश्वर का मुख देखेगा.वे व्यक्ति निश्चित रूप से यह नज़ारा देख पाएंगे.'साफ ह्रिदय वाले व्यक्ति,अपनी हर कथनी और करनी में पर्मेश्वर

को प्रतिबिम्बित पाएंगे.
फुटनोट:ग्लेन स्टासेन और डेविड गुशी,'किंग्डम एथिक्स,आई.वी.पी,डाउनर्ज़ ग्रोव,२००३,प्रिष्ठ १४२
प्रिष्ठ २२
'शान्ति के रचयिता आशीषित हैं'-वे ही वास्तव में 'पर्मेश्वर की संतान' हैं. शान्ति के रचयिता आशीषित होंगे;उन्हें पर्मेश्वर की संतान बुलाया जायेगा.(मति५:९)
विभिन्न धार्मिक मतों की परम्पराओं में कई भक्त हैं,जो 'पर्मेश्वर की संतान' होने का दावा करते हैं.
और इन्हीं व्यक्तियों में से कई व्यक्ति,पर्मेश्वर के नाम पर,अपने ही भाईयों और बहनों को मौत के घाट उतारने पर लगे हैं.
अपनी हिंसा के समर्थन में,ईसाई,मुसलमान और यहूदी व्यक्ति,बाइबल के कुछ अंशों में दर्शाए,हिंसा को प्रोत्साहन देने वाले पदों का सहारा लेते हैं. यदि ऐसे व्यक्तियों से उनकी हिंसक क्रियाओं के विषय में पूछा जाए,तो वे मूसा का हवाला देकर कहते हैं,"यदि कोई आपको गहरी चोट पहुण्चाता है,तब उस स्थिति में,आप जान के बदले जान,आँख के बदले आँख,दाँत के बदले दाँत,हाथ के बदले हाथ,पाँव के बदले पाँव,जलाहट के बदले जलाहट,घाव के बदले घाव,और ज़ख्म के बदले ज़ख्म ले सकते हैं.(निर्गमन २१:२३,२४)
ईसाईयों को इस बात को ध्यान में रखना चाहिये कि गत १००० वर्षों में,ईसाई और मुसलमान राज्यों के बीच हुए युद्धों की अपेक्षा,मसीही राज्यों ने एक दूसरे के विरुद्ध,घमासान युद्ध कहीं अधिक मात्रा में लडे हैं.यही नहीं,बल्कि मसीही साम्राज्यों ने जितने यहूदियों और मुसलमानों को मौत के घाट उतारा है-उसकी संख्या उन ईसाईयों और यहूदियों से

अधिक है,जिन्हें मुस्लिम राज्यों ने मौत के घाट उतारा है
जहाँ एक ओर यह बात सच है,कि येशू ने यहूदी बाइबल,हमारे 'पुराने नियम' को अपने अधिकार का स्रोत माना है(मति५:१७-२०),वहीं यह बात भी सच है,कि उन्होनें नियम का और नबियों के,विशेषकर यशायाह के अनुसार अर्थ निकाला था.अपनी सेविकाई के प्रारंभ में ही,उन्होनें यशायाह का उदाहरण दिया था(लूका ४).शान्ति-रचना के प्रति,येशू का समर्पण,यशायाह के शांति के दर्शन से प्रेरित हुआ था.येशू को यशायाह के यह वचन दिल से याद थे,'शान्ति और सुसमाचार लानेवालों के चरण,पर्वतों के मार्गों पर कितने प्यारे लगते हैं(यशायाह ५२:७).वे जानते थे कि 'सुसमाचार लानेवाले व्यक्ति,सडकों पर चीखेंगे,चिल्लाएंगे नहीं;एक घाव किये हुए सरकंडे को वे तोडेंगे नहीं;और एक सुलगती बत्ति को वे बुझाएंगे नहीं.(यशायाह ४२:२).उसकी उसके लोगों के लिये यह प्रार्थना थी,'तुम्हारी सीमाओं में न तो विनाश का स्वर गूंजेगा,और न ही तुम्हारी भूमि में हिंसा दिखाई देगी.'(यशायाह ६०:१८)
अपनी सेविकाई के प्रारम्भ में ही,यूहन्नाबप्तिस्माकर्ता ने येशू का इस प्रकार परिचय दिया था,'पर्मेश्वर का वह मेमना,जो संसार के पापों को ले जाता है.(यूहन्ना १:२९) हम यहाँ यह जानते ही हैम,कि इस संदर्भ में,'मेमना' शब्द को,आक्षरिक तरीके से नहीं लेना चाहिये.येशू एक 'मनुष्य' था;मेमना नहीं.परन्तु,'मेमना' शब्द,उस बात को विवरित करता है-कि येशू किस प्रकार का मनुष्य था.वह एक 'मेमना-रूपी'मनुष्य था-स्वच्छ और शान्तिप्रिय. वह कोई कपटी,मेमने की खाल में छुपा भेडिया नहीं था.
पर्मेश्वर के मेमने,येशू की मंशा थी कि वह समाज के निचले स्तरों पर,ऐसे समुदायों की रचना करे,जिन्हें वह 'भेडों के झुंडों' की संग्या देता

था.(यूहन्ना १०:११-१६),'भेड' एक ऐसा शब्द है,जिसका प्रयोग येशू ने उन व्यक्तियों के लिये किया था,जो कि अन्य व्यक्तियों का शोषण करने वाले भेडियों के साथ बसते हैं;परन्तु उनके समान भेडिये बनने से इंकार कर देते हैं.वे इस ज़ोखिम के साथ जीते हैं कि भेडिए-रूपी मानस उनको इस 'गुनाह' के लिये टुकडे-टुकडे कर सकते हैं.इस संदर्भ में येशू का कहना है,"मैं चाहता हूं कि तुम भेडियों के बीच भी भेडों की भाँति रहो.'चतुर अवश्य बनो,परन्तु किसी अन्य व्यक्ति को हानि न पहुंचाने वाले भी बनो.'(मति १०:१६)'हमेशा अन्य व्यक्तियों से वैसा ही व्यवहार करो,जैसा आप स्वयं के साथ चाहते हैं.'उन्होनें आगे यह भी कहा,"यहां तक कि उनका भला करो,जो आपके साथ बुराई करते हैं.आपसे घ्रिणा करनेवालों के साथ भी प्रेम करो."

फुटनोट:१२ अलाईव ऐंड किकिंग,न्यू इन्टरनैशनलिस्ट,अगस्त,२००४ प्रिष्ठ २३

'जो आपसे नफरत करते हैं,उन्हें आशीष दो(मति५:४४).उन्होनें अपने अनुयायियों से यह भी कहा,"उनसे न डरो,जो केवल शरीर को तो नष्ट कर सकते हैं,परन्तु तुम्हारी आत्मा को नहीं.(मति१०:२८).

येशू ने बारंबार,स्पष्ट रूप से,उस मूसाई नियम का खंडन किया,जिसमें प्रतिशोध को न्यायसंगत ठहराया गया था.'आपने यह सुना था कि यह कहा गया था,'आँख के बदले आँख और दाँत के बदले दाँत.'परन्तु मैं तुम्हें अब यह शिक्षा देता हूं,'किसी बुरे व्यक्ति से भी बदला न लो.'बल्कि यदि कोई व्यक्ति आपके दाएं गाल पर थप्पड मारता है,तब अपना दूसरा गाल भी उसके सम्मुख कर दो(मति५:३८-९) इसके अतिरिक्त,येशू ने अपने चेलों को यह भी शिक्षा दी,'अपनी आस्था के लिये,आपको हमेशा मरने के लिये तैयार रहना चाहिये;मारने के लिये

नहीं.(मति१६:२४)सो,उसके निर्देशों के अधीन,येशू की मुहिम,एक 'यहूदी शान्ति की मुहिम बन गयी.(१३)

तीन शताब्दियों तक,मसीहत पूर्णत: एक अहिंसावादी मुहिम रही.प्रेरितों ने मसीहीयों को अहिंसावादी सिद्धांत सिखलाया,'प्रेम,कभी अपने पडोसी की हानि नहीं चाहता.'(रोमियों १३:१०).पौलुस ने तो यहां तक कहा,'जो आपको सताते हैं,उन्हें आशीष दो;आशीष दो और श्राप न दो.'बुराई के बदले बुराई न करो.ध्यानपूर्वक वही करें,जो सबकी द्रिष्टि में सही हो.जहाँ तक संभव हो सके,सब व्यक्तियों के साथ शान्ति से निबाह करो.किसी से बदला न लो.बल्कि इसके ठीक विपरीत,'यदि आपके शत्रु भूखे हैं,तो उन्हें कुछ खाने को दो;यदि वे प्यासे हैं,तो उन्हें कुछ पीने को दो.'"बुराई से हारो मत.बल्कि बुराई को अच्छाई से जीतो."(रोमियों १२:१४-२१)

जब मसीहत,रोमी साम्राज्य का औपचारिक धर्म बन गया,तब ऐम्ब्रोज़ और औगस्टीन ने कुछ ऐसे मापदण्डों को विकसित किया,जिनके तहत उन्होनें,सत्ताधारियों को-जो कि युद्धों की घोषणा करते हैं-उन्हें न्याय के सिद्धांतों के प्रति जागरुक रहने का परामर्श दिया.उन्होनें कहा कि किसी भी युद्ध के वैध ठहराए जाने के लिये,आठ शर्तों का पूरा होना आवश्यक है.पहले,युद्ध का उद्देश्य न्याय की प्राप्ति होना चाहिए;और इस संदर्भ में,उसी उद्देश्य को न्यायसंगत माना जायेगा,जो कि बहुसंख्या में,लोगों के मारे जाने से बचाव कर सके.दूसरे,ऐसी प्रक्रियाओं का प्रशासन किसी 'न्यायपूर्ण' अधिकारी द्वारा किया जाना चाहिये.ऐसे अधिकारियों को,युद्ध की घोषणा से पहले,कुछ न्यायसंगत प्रक्रियाओं को पूरा करने का समय देना चाहिए.तीसरे,युद्ध का एलान,अंतिम विकल्प के रूप में करना चाहिए-केवल तभी जब बातचीत,आपसी वार्तालाप और अहिंसात्मक प्रतिबंधों के मार्ग विफल हो गए हों.चौथे,युद्ध किसी 'न्यायसंगत' लक्षय के लिये होना

चाहिए-जैसे कि विवाद में पडे सभी पक्षों(जिनमें हमारे शत्रु भी सम्मलित हैं) के कल्याण और सुरक्षा के लिये.पाँचवे,ऐसा युद्ध अक़लमंदी भरा ज़ोखिम होना चाहिए;कोई बेमतलब का संकेत नहीं;बल्कि एक ऐसा वास्तविकता से जुडा प्रयास,जिसकी सफलता का भी अंदेशा हो.छठे-ऐसे युद्ध के परिणाम इस प्रकार के होनें चाहियें-कि विजय के परिणाम,इंसानी नुकसान से अधिक हों.सातवें,कोई भी सरकार जो युद्ध की तैयारी में लगी है,उसे अपनी मंशा का एलान कर देना चाहिये-उन्हें,स्पष्ट रूप से उन शर्तों को सामने रख देना चाहिए,जिनकी पूर्ति से युद्ध से बचा जा सकता है.अर्थात,युद्ध से बचने का हर संभव प्रयास करना चाहिए.आठवें-यदि फिर भी युद्ध होता है,तब न केवल उसके परिणाम(अंत),बल्कि उसकी प्रक्रियाएं भी न्यायसंगत होनी चाहिएं;युद्ध में सक्रिय रूप से न लडनेवालों की रक्षा की जानी चाहिए;आत्म-समर्पण की स्थिति में,लडाकों को रक्षा प्रदान की जानी चाहिए;और सभी कैदियों को यातना से बचाना चाहिए.इन मापदंडों के अनुसार,हमारे वर्तमान युद्ध,'न्यायसंगत' युद्ध नहीं हैं.शान्ति और न्याय के प्रति समर्पित मसीह होने के नाते,हमें सक्रिय रूप से ऐसे युद्धों का केवल विरोध ही नहीं करना चाहिए,बल्कि अपने शत्रुओं के साथ सुलह करने का हर संभव प्रयास करना चाहिए.

फुटनोट:१३. ग्लेन स्टासेन और डेविड गुशी,किंग्डम एथिक्स,आई.वी.पी,डाउनर्ज़ ग्रोव,२००३,प्रिष्ठ १५२

प्रिष्ठ २४

येशू का यह कथन है कि केवल समर्पित 'शान्ति-रचयिता' ही,'पर्मेश्वर की संतान' कहलाने लायक हैं.

८. वे आशीषित हैं,जो सही मार्गों का अनुसरण करने के कारण सताए जाते हैं.
उन पर आशीष है,जो कि सही मार्गों पर चलने के कारण सताए जाते हैं;स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है(मति ५:१०)
इन पदों को पढते समय,मेरे विचार में,हमें यह बात स्पष्ट होनी चाहिये कि यहाँ पर येशू क्या नहीं कह रहा है.इससे पहले कि हम उस बात पर मनन करें,जो येशू कह रहा है,येशू निश्चित रूप से यह नहीं कह रहा है कि 'सतावट सहने वाले व्यक्ति आशीषित हैं'.जैसे कि सतावट मात्र सहने में कोई अंदरूनी गुण हो.सुसमाचार पत्रों में येशू कहीं भी यह नहीं कहता कि दुख उठाने मात्र में-विशेषकर सतावट की मार सहने में-मूल रूप से कोई महिमा है.
परन्तु,येशू यह अवश्य कहता है,'जो लोग सही कार्यों के करने के कारणवश,सतावट उठाते हैं,वे आशीष के हक़दार हैं.(मति५:१०).'सही मार्गों' पर चलने के कारण जो सतावट सही जाती है,वही मूल रूप से मूल्यवान है.
सारे सुसमाचार पत्रों में,येशू अपने शिष्यों से यह कहता है,कि यदि वे एक 'भ्रमित संसार' में,'सही कार्य करने वाले'व्यक्ति बनने की कामना करते हैं,तब उन्हें सत्ता के हाथों,उसी सतावट को सहने के लिये तैयार रहना चाहिये,जो उसने स्वयं सही है.येशू का कहना है,"मैं संसार का प्रकाश हूं."(यूहन्ना ८:१२) और 'मेरे समान तुम भी संसार के प्रकाश हो.'(मति५:१४).ऐसी बात पहली द्रिष्टि में लुभावनी प्रतीत होती है;परन्तु दूसरी/तीसरी नज़र में,वह एक ऐसी भूमिका की ओर इशारा करती है,जिसके भयावह परिणाम हैं.कोई भी प्रकाश केवल एक ज्वाला नहीं

है,जो अपनी ओर मात्र ध्यान आकर्षित करता है,परन्तु वह एक ऐसी ज्योति भी है,जो अंधकार को प्रकाशमान करती है.प्रत्येक व्यक्ति,जो बुराई करता है,वह प्रकाश से भी घ्रिणा करता है;क्योंकि वह अपने बुरे कर्मों का खुलासा नहीं चाहता.(यूहन्ना३:२०).जो व्यक्ति अपने 'बुरे कर्मों' को प्रकाशमान नहीं होने देना चाहता ,वह हमेशा येशू और उसके जैसे प्रकाशमान व्यक्तियों को क्रूस पर चढाने को तत्पर रहेगा.इसी कारणवश,येशू अपने शिष्यों को यह परामर्श देता है,"यदि कोई भी मेरे पीछे आना चाहता है,तब यह आवश्यक है कि,वह 'स्वयं' से इंकार करके,अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे चले(मति१६:२४)उसका इस संदर्भ में स्पष्ट कथन है,"आपको यह चेतावनी है कि सभी व्यक्ति मेरे कारण आपसे नफरत करेंगे;वे आपके स्थानीय न्यायालयों के सुपुर्द करके,अपने प्रार्थनाघरों में आपको कोडे लगाएंगे.भाई-भाई को धोखा देकर उसे मौत के घाट उतरवा देगा;पिता अपने पुत्र/पुत्री के साथ वही करेगा;यहाँ तक कि संतानें अपने माता-पिता के विरुद्ध बग़ावत करके,उन्हें मौत के घाट उतरवा देंगे."(मति१०:१७-२५)

हमारी बुलावट मात्र सतावट सहने की नहीं है,बल्कि येशू के कदमों में चलने की है.यदि अन्याय के विरुद्ध,न्याय कर पाने की प्रक्रियाओं में सतावट आवश्यक है,तो ऐसा ही सही,उस संदर्भ में,येशू के पीछे हो लेना ठीक उसी प्रकार 'सहीए रास्तों पर चलने के लिये' सतावट सहना है,जैसे कि येशू ने सही थी.पत्रस के शब्दों में,'आपके लिये दुख उठाकर येशू ने आपके लिये एक जीवांत उदाहरण छोड दिया है-ताकि आप उसके कदमों पर चल पाएं.(१ पत्रस२:२१) इस वाक्य में,पत्रस ने 'उदाहरण'के लिये जिस शब्द का प्रयोग किया है,वह अद्भुत है.यह शब्द है,'हूपोग्रोमोस'.जिसका मायने है-किसी अभ्यास-पुस्तिका के ऊपर लिखा

वह पहला वाक्य,जिसे आप तभी सफलतापूर्वक लिख सकते हैं,यदि आप उसका रेखा-दर-रेखा,क़रीबी अनुसरण करें.अत:पत्रस का यह कहना है कि मूल रूप से,हमें येशू के क़दमों का अनुसरण,क़रीब से करना चाहिए.इसी प्रकार से,हम येशू के समान,उसी प्रकार से,सतावट सहने की अपनी क्षमता को विकसित कर पाएंगे.१४

सही कार्यों के लिये सतावट उठाने की इच्छा द्वारा,हम तीन बातों की उप्लब्धि कर पाएंगे.

फुटनोट:१४. डब्ल्यू.बार्कले,'द लेटर्ज़ औफ़ पीटर','द डेली स्टडी बाईबल,द सेंट एंड्र्यूज़ प्रेस,एडिनबरा,प्रिष्ठ ९५

इस प्रकार हम न केवल बुराई पर विजय पाएंगे;बल्कि हम कुछ अच्छाई भी कर पाएंगे;और हम मसीह के मार्ग की सशक्त गवाही भी दे पाएंगे सर्वप्रथम,हम बुराई पर विजय प्राप्त कर पाएंगे.सही मार्गों पर चलने के लिये यातना पाना बुराई है.जब कभी अन्य व्यक्ति हमारे साथ बुराई करते हैं,तब हमारी प्रतिक्रिया होती है-उस बुराई का बदला लेना.परन्तु,ऐसा करने से,संसार में,बुराई का शिकंजा और अधिक कस जाता है.अत: हमें यह स्पष्ट निर्देश दिया गया है,कि हम किसी भी परिस्थिति में,बुराई का बदला बुराई से न दें(रोमियों १२:१७)बुराई का बदला बुराई से देने की बजाए,हमसे यह अपेक्षा की जाती है कि हम बुराई को स्वयं में 'सोख' लें-और इस प्रकार,बिना किसी हिंसक प्रतिक्रिया को व्यक्त किये ही,हम उसकी शक्ति को ही नष्ट कर दें.'बुराई का विरोध न करो.यदि कोई तुम्हारे दाएं गाल पर थप्पड मारता है,तब उस व्यक्ति के सम्मुख अपना दूसरा गाल भी कर दो.(मति५:३९)

गेल वेब का इस मामले में यह कहना है,"बुराई से जूझने के अनेक

तरीके हैं.वे सभी तरीके एक ही सत्य के विभिन्न पहलू हैं;और वह सत्य यह है कि कोई 'जीवित' मनुष्य,स्वयं में उस बुराई को सोख ले.ऐसे करने से,वह बुराई भाले की तरह,स्वयं में सोख ली जाती है;और वह वहीं नष्ट होकर,उसके आगे नहीं जाती.येशू की द्रिष्टि में,जब वे व्यक्ति,सही मार्गों पर चलने के समय,अपना दूसरा गाल भी अपने विरोधियों के सम्मुख कर देते हैं,तब वे 'आशीषित' बन जाते हैं.क्योंकि ऐसे घावों को स्वयं में सोख लेने के कारण,ये 'भाले'व्यक्ति के ह्रिदय तक घुसकर,उससे आगे नहीं जाते,और इस प्रकार,बुराई आगे नहीं जाती.१५

दूसरे,हम ऐसी स्थितियों में भी भलाई कर सकते हैं.बुराई से भरी इस दुनिया में,हम तभी अच्छाई करने के लिये स्वतंत्र हैं,यदि हम सही मार्गों पर चलने के लिये सतावट सहने को तैयार हैं.हमारे दुख सहने की तत्पर्ता में ही,हमारी क्रियाओं में मुक्ति दिखेगी.येशू ने यह स्पष्ट कहा है कि ऐसे संदर्भ में,जहाँ अन्य व्यक्ति आपको सही कार्य करने के लिये मार तक सकते हैं;वहाँ,कोई भी व्यक्ति जो अपने प्राणों की रक्षा करना चाहे,वह अपने प्राण गँवा बैठेगा,परन्तु जो कोई भी अपने प्राण मेरे और मेरे सुसमाचार के लिये गँवाएगा,वह स्वयं को बचा लेगा.(मरकूस८:३५) लेखक-वैग्यानिक,विक्टर फ़्रैंकल ने जरमन 'कन्सन्ट्रेशन' कैम्पों में एक यहूदी मनोचिकित्सक होने के नाते,यह स्वयं देखा था कि,जो व्यक्ति वहाँ,किसी भी कीमत पर,अपनी जान बचाने के लिये,अपने मानवीय मूल्यों की अनदेखी करते थे,वे अपनी 'आत्मा' खोकर,'पिट्ठू'बन जाया करते थे-परन्तु,हममे से वे व्यक्ति,जो अपने ह्रिदय में भीतर समाए कुछ मानवीय मूल्यों की,मारे जाने की स्थिति में भी अनदेखि नहीं करते,वे व्यक्ति आशीषित हैं.ऐसे व्यक्ति अपने ह्रिदय की गहराईयों के साथ समझौता नहीं करते और अपनी मानवता का भी संरक्षण करते हैं.

तीसरे,हम ऐसी विकट स्थितियों में भी,येशू के मार्ग के प्रति प्रभावशाली गवाही दे सकते हैं.यदि कोई व्यक्ति अपने आदर्श के लिये अपने प्राणों की आहुति भी देता है,तो यह निश्चित नहीं है कि उसका आदर्श सही है.परन्तु,प्रेम की एक पत्री,जो लहू में लिखी गयी है;उससे जल्द छुटकारा नहीं पाया जा सकता.जो मुहिम,मरने-मारने के लिये वैध ठहराई जा रही है;वही मुहिम,जीने और जीवनदान देने के योग्य भी ठहराई जानी चाहिए.यदि हमारी सतावट,येशू के प्रेम को भी प्रतिबिम्बित करती है,तो वह हमारी वर्तमान,ह्रिदयहीन,राजनैतिक अर्थव्यवस्था के अंधेरे कोनों में भी प्रेम की आशा उज्जवलित कर सकती है.

येशू का यह भी वचन है कि 'न्याय के मार्गों' पर चलने से सतावट सहने वाले व्यक्ति यदि वर्तमान में आशीषित नहीं होते,तो कोई चिंता नहीं-उन्हें निश्चित रूप से आगामी संसार में आशीषित और सम्मानित किया जायेगा.

फुटनोट:१५. जी.वेबे;'द नाईट एण्ड नथिंग,सीबरी प्रेस,न्यू यौर्क,१९६४,प्रिष्ठ १०९

१६.विकटर फ्रैंकल,'मैंज़ सर्च फौर मीनिंग'साइमन एण्ड शूस्टर,न्यू यौर्क,१९६३

प्रिष्ठ २७

ग्लैडिस आंटी;न कि अंकल जौर्ज,हमें आगे का मार्ग दर्शाते हैं

ग्लैडिस स्टेंज़(वेदरहेड) का जन्म सन १९५१ म्वं हुआ था.उनकी पर्वरिश दक्षिण-पूर्वी क्वीन्ज़लैंड में,इप्स्विच से थोडा ही बाहर,पीक्स क्रौसिंग में हुई थी.ब्रेदरन परिवेश में पलने-बढने के फलस्वरूप,वे एक समर्पित मसीही बन गईं.स्कूल पूरा करने के पश्चात,ग्लैडिस ने इप्स्विच में

नर्सिंग सीखी और लाउनसेस्टन में दाई का प्रशिक्षण हासिल किया. सन १९८१ में,भारत के एक दौरे पर,उनकी भेंट अपने भविष्यगामी पति,ग्राहम से हुई.ग्राहम भी,ग्लैडिस की भाँति,औस्ट्रेलिआ देश का निवासी था और वह भारत,दरिद्रों के साथ,काम करने आया था;विशेषकर,कोढ से त्रस्त रोगियों के साथ.ग्लैडिस का कहना है कि वह ग्राहम के आम लोगों के प्रति प्रेम से खासी प्रभावित हुई और उसे ऐसा प्रतीत हुआ,कि यही वह जीवन-साथी था,जिसकी उसे कामना थी.सन १९८३ में उनका विवाह संपन्न हुआ,जिसके फलस्वरूप,उनकी तीन संतानें हुईं-एक पुत्री,एस्थर और दो पुत्र,फिलिप और टिमोथी

जिस वर्ष उनका विवाह हुआ,उसी साल,ग्राहम और ग्लैडिस,उडीसा राज्य के मयुरभंज क्षेत्र में,बडिपदा नमक स्थान पर जाकर बस गए,जहाँ पर उन्होनें,कुष्ठ घर(लेप्रसी होम) की बाग़डोर संभाली.यह घर न केवल कुष्ठ के रोगियों को उपचार प्रदान करता था,बल्कि हथकरघा और सबाई घास के पदार्थों को बनाने का प्रशिक्षण देकर,उनके पुनर्वास का भी प्रयास करता था.यह 'मिशन'अपना ही डेरी फार्म भी चलाता था.ग्लैडिस का कहना है कि इस 'घर' के बरिपदा के निवासियों के साथ इसलिये अच्छे संबंध थे,क्योंकि बीमार पडने की स्थिति में,या सर्पों द्वारा काटे जाने पर,नगर के निवासी अपने उपचार के लिये यहाँ आते थे.ग्राहम,उडिया,संथाली और हो भाषाओं में प्रवीण था;और बाइबल के 'हो' भाषा के अनुवाद में सहायता प्रदान करता था.बच्चों के होने पर,ग्लैडिस ने यह बात सुनिश्चित करी कि उसके बच्चे न केवल स्थानीय भाषा सीखें,बल्कि स्थानीय बच्चों के साथ खेलें भीं;इनमें,बरिपदा कुष्ठघर के कुष्ठ रोगियों के बच्चे भी शामिल थे.

स्वामी अग्निवेश नामक एक प्रसिद्ध,आर्यसमाजी हिन्दू अगुवे का यह

कहना है,"स्टेंज़ परिवार के सदस्यों का संथाली भाषा में बोलना ही इस बात का प्रमाण है कि उन्होनें किस हद तक स्थानीय लोगों की संस्क्रिति को अपना लिया था.यह हमारे देश के उच्च वर्गों के व्यवहार के कितना विपरीत है,जो कि अपने ही देश को छोडने को तत्पर हैं.स्टेंज़ परिवार के सदस्यों के व्यवहार के ठीक विपरीत,वे स्थानीय भाषाओं के बोलने में अपनी अवहेलना समझते हैं.और यह तो किसी का भी अनुमान होगा कि वे कुष्ठ रोगियों के बच्चों के साथ अपने बच्चों को कभी खेलने भी देंगे."दूर-दराज़ के क्षेत्रों में ग्राहम,मसीहियों के लिये 'जंगल' कैंपों को संघठित करता था.('जंगली'अंग्रेज़ी शब्द 'वाइल्ड' का हिन्दी रूपान्तर है.)इन कैंपों में,जहाँ एक ओर,ग्राहम बाइबल की कक्षाएं लेता था;वहीं,दूसरी ओर,उसके साथी,स्वास्थय और साफ रख-रखाव से संबंधित कक्षाएं लेते थे.और ऐसे ही १४वे वार्षिक,जंगल,बाइबल कैम्प के दौरान(जो कि मनोहरपुर गाओं में हो रहा था);जनवरी २३,१९९९ को,ठीक आधी रात के पश्चात,जब ग्राहम,फिलिप और टिमथी अपनी स्टेशन वैगन में सो रहे थे,कि उनकी गाडी पर हमला किया गया,उस पर पेट्रोल छिडककर उसे आग लगा दी गई,जिसके फलस्वरूप ग्राहम और उसके पुत्र ज़िंदा जला दिए गए.

जनवरी २००० को,मयुरभंज के वनों में छिपे,दारा सिंह नामक एक स्थानीय हिंदू उग्रवादी को पकड लिया गया और उस पर इन व्यक्तियों की न्रिशंस हत्या के आरोप दायर हुए.दारा सिंह इस परिवार की 'सुसमाचार बाँटने' संबंधी प्रक्रियाओं से अत्यंत क्रुद्ध था.सन अप्रैल,२००३ को इस मामले की सुनवाई आरंभ हुई और सितम्बर २००३ को,न्यायालय ने,दारा सिंह और १२ अन्य व्यक्तियों को स्टेंज़ परिवार के इन सदस्यों की हत्या का दोषी ठहराया.

१७.'हीलिंग द स्पिरिट औफ़ ग्लैडिस स्टेंज़;स्वामी अग्निवेश.
प्रिष्ठ २८
जहाँ एक ओर,दारा सिंह को मौत की सज़ा सुना दी गई,वहीं उनके अन्य सहयोगियों को आजीवन कारावास का दंड सुनाया गया.
जिस अमय ग्लैडिस को अपने पति और बच्चों की जघन्य मौत का समाचार सुनाया गया-उस समय से लेकर इस समय तक,जब इन व्यक्तियों की मौत के ज़िम्मेदार व्यक्ति,दारा सिंह और उसके सहयोगियों को दोषी ठहराया गया-इस सारे समय के दौरान,ग्लैडिस ने सार्वजनिक रूप से इन हत्यारों को अपनी क्षमा प्रदान करी.
ग्लैडिस ने कहा,'ऐसा करना,मेरे लिये कोई गहरे मनन का विषय नहीं था.परन्तु यह जानने पर कि मेरे परिवार के अन्य सदस्यों को मौत के घाट उतार दिया गया है,मैने तुरन्त अपनी पुत्री,एस्थर से कहा,"हम उन व्यक्तियों को क्षमा करेंगे,जिन्होनें ऐसा किया है-है न? और उसने उत्तर दिया,"हाँ माँ,हम ऐसा ही करेंगे."
इस घटना के दो सप्ताह पश्चात,किसी व्यक्ति ने मुझे मेरी पुत्री के स्कूल में कहा,"मुझे समझ नहीं आया के आप क्षमा कैसे कर सकती हैं?"इस पर मेरी पुत्री ने मुझे बाद में कहा,"माँ,मुझे यह समझ नहीं आया कि उन्हें यह समझ क्यों नहीं आया कि हमने क्षमा प्रदान क्यों की है?"यह सुनकर,मुझे यह आभास हुआ कि येशू मसीह की शिक्षाएं,मेरी बेटी के अंतर में किस कदर जडें जमा चुकी थी.क्षमादान से चंगाई होती है.इससे अन्य व्यक्तियों को अपना जीवन पुन: आरंभ करने का अवसर मिलता है.यदि मेरे दिल में आपके विरुद्ध कोई रंज है,और मैं आपको इसकी क्षमा दे देता हूं,तब घ्रिणा मेरे दिल से दूर हो जाती है.ऐसा करने से,आप भी क्षमा ग्रहण करके,आगे बढ सकते हैं,क्षमा,क्षमा प्रदान

करनेवाले व्यक्ति और क्षमा ग्रहण करने वाले व्यक्ति,दोनों को,मुक्त करती है.मेरे ह्रिदय में किसी के विरुद्ध नफरत नहीं है."१९
सुनवाई के दौरान,ग्लैडिस और एस्थर,भारत में ही टिके रहे.'ग्राहम को यह कतई पसंद नहीं आता यदि मैं अपना सामान बाँधकर,औस्ट्रेलिया वापस चली जाती.अनिवार्य बात यह है कि हम पद-दलितों के लिये काम करते जाएं."२० सो,जहां एक ओर,एस्थर ने ऊटी में अपनी पढाई पूरी की;वहीं दूसरी ओर,ग्लैडिस ने 'लेप्रसी होम' में अपना काम जारी रखा.अभी हाल में ही,अपनी बेटी,एस्थर की पढाई पूरी कराने के उद्देश्य से,ग्लैडिस,पुन: औस्ट्रेलिया लौटी है.
इस संदर्भ में,स्वामी अग्निवेश का यह कहना है,"जात-पात और वर्गों की सीमाओं की बिना परवाह किये,देश भर के लोगों ने इन क्षणों को वास्तविक आत्मिकता के सबसे उत्तम क्षणों के रूप में चिन्हित किया.श्रीमति ग्लैडिस स्टेंज़ का आत्मिक दर्ज़ा,उनकी उत्तम प्रकार की प्रतिक्रियाओं में दिखता है.हालांकि अपने प्रिय पति और प्यारे बच्चों की जघन्य हत्या के कारण,ग्लैडिस की आत्मा को बडा आघात पहुंचा था,उसने घ्रिणा को अपने दिल में कोई स्थान नहीं दिया.उसने तुरन्त अपने पति के हत्यारों को क्षमा किया.इस समय,उसकी यही प्रार्थना रही,कि पर्मेश्वर के जिस प्रेम ने उसके पति को प्रेरित किया था,वही प्रेम उसके हत्यारों के दिलों को भी छुए.ग्लैडिस मेम इस बात को जानने का यह आत्मिक बडप्पन था,कि जिन व्यक्तियों के दिमाग,घ्रिणा से भरपूर हो जाते हैं,वे भी पर्मेश्वर की संतानें हैं और वे भी क्षमा के हक़दार हैं.उनकी १३-वर्षीय पुत्री,एस्थर ने,पर्मेश्वर को,उसके पिता के कुष्ठ रोग से ग्रस्त व्यक्तियों के लिये प्रेम के लिये धन्यवाद दिया,और इस बात के लिये भी उसने पर्मेश्वर की स्तुति की,कि उसने उसके पिता को उसके

लिये मारे जाने के लायक समझा.क्या इस प्रकार की प्रतिक्रियाएं,सबसे सख्त ह्रिदयों को भी न पिघला देंगीं?२१

भारत के लोगों की,ग्लैडिस और एस्थर के व्यवहार,के प्रति अद्भुत प्रतिक्रिया देखने में आई है.देश-भर के लोग उनके समर्थन में आगे आये हैं.हज़ारों व्यक्तियों ने उन्हें समर्थन और सांत्वना के पत्र लिखे हैं.यही नहीं,बल्कि कुछ प्रसिद्ध हिन्दू नेताओं ने इन दोनों के समर्थन में एकता-यात्राएं निकाली हैं.

फुटनोट:

१८.'फौरगिवनेस ब्रिंग्स हीलिंग:डब्लीयू डब्लीयू डब्लीयू.लाईफ़्पौज़िटिव.कौम

१९. 'आई ऐम ओवरव्हेल्म्ड:ग्लैडिस स्टेंज़;द हिन्दू,मार्च २८,२००६,नई दिल्ली

२०.'वन्स यू फ़ोरगिव,देअर विल बी हीलिंग',क्रिश्चैनिटी टुडे,फरवरी २००३;एस डेविड और मनप्रीत सिंह

२१.'हीलिंग दि स्पिरिट औफ़ ग्लैडिस स्टेंज़';स्वामी अग्निवेश

प्रिष्ठ २९

सन २००२ में,शान्ति-कार्यकर्ताओं ने ग्लैडिस को गांधी कम्यूनिटी हार्मनी पुरस्कार से सम्मानित किया.और सन २००५ में,भारत के राष्ट्रपति,अब्दुल कलाम,जो कि स्वयं एक मुसलमान हैं-उन्होनें ग्लैडिस को देश के उच्चतम नागरिक सम्मान,'पद्मश्री' से सम्मनित किया.यह सम्मान उन्हें देश के लिए समर्पित सेवा प्रदान करने के उप्लक्ष्य में दिया गया.

इस संदर्भ में,स्वामी अग्निवेश का यह कहना है,"श्रीमति स्टेंज़ जैसे व्यक्तियों में ही धर्म का असली रूप दिखता है.स्टेंज़ परिवार के सदस्यों के लिये यह आत्मिकता,येशू मसीह के जीवन और उसकी क्रूस पर बलि में प्रतिबिम्बित थी;परन्तु अन्य व्यक्तियों के लिये भी,उसी प्रकार की

आत्मिकता,उनकी अपनी धार्मिक परंपराओं के रूहानी केन्द्र के संदर्भ में,उतनी ही आवश्यक हैं.हममे से वे व्यक्ति,जो वास्तव में अपने मतों का सम्मान करते हैं;हम ऐसे चुनौतीपूर्ण उदाहरण से प्रेरणा पाए बिना नहीं रह सकते.परन्तु,ऐसा करना ही पर्याप्त न होगा.हमें अपनी धार्मिक परंपराओं के ठेकेदारों पर भी नैतिक दबाव डालने की आवश्यकता है.सारा देश,धर्म के नाम पर हो रही हिंसा और धोखेबाज़ी से थक चुका है.इस संदर्भ में,भारतीय परिवेश की कोई भी धार्मिक संस्था निर्दोष नहीं है.राष्ट्रीय द्रिष्टिकोण के नज़रिए से,व्यक्तियों को एक धर्म से दूसरे मत में धर्म-परिवर्तन कराना सबसे आवश्यक चीज़ नहीं है;बल्कि सभी परंपराओं को मानने वाले व्यक्तियों को उनके धर्मों के केंद्रों के प्रति सच्चाई बरतने की चुनौती देना है.अपनी आस्था को सुधारवादी व स्रिजनात्मक बनाना ही समय की मांग है.भारत की आत्मिक मंज़िलों की तभी पूर्ति होगी,जब हमें इस बात का आभास होगा,कि पर्मेश्वर हमारे निजी हितों की मात्र एक प्रतिमा नहीं है,बल्कि बलिदान-भरे ह्रिदय से,प्रेम से निकलती सत्य और न्याय की एक पुकार है.२२

फुटनोट:'हीलिंग द स्पिरिट औफ़ ग्लैडिस स्टेंज़':स्वामी अग्निवेश प्रिष्ठ ३०

वीकैन.बी

हम स्वयं वह परिवर्तन बन सकते हैं,जो हम देखना चाहते हैं.

हमें भी ग्लैडिस के समान,स्वयं को उस रूप में परिवर्तित कर सकते हैं,जो हम संसार में देखना चाहते हैं.परन्तु ऐसा हम तभी कर सकते हैं,जब हम भी ग्लैडिस की भाँति,वास्तविक संसार में उन 'सही रवैयों' का अभ्यास करें,जो येशू ने मार्गदर्शकों के रूप में हमें प्रदान किए थे.

यदि आप इस विषय पर आगे बढने को तैयार हैं,तब मेरा सुझाव है की

आप किसी ऐसी भाषा में इन 'सही रवैयों' के रूपान्तर की प्राप्ति करें,जो आप सरलता से समझ सकते हैं.आजकल,बाइबल के अनेक रूपान्तर मिल सकते हैं.एक ऐसे रूपन्तर का चुनाव करें,जो इन 'सही रवैयों' को ऐसे शब्दों में व्यक्त करते हैं;जो आपके ह्रिदय से बात करते हैं.यदि आपको कोई ऐसा बना-बनाया रूपान्तर प्राप्त नहीं होता,तो निराश मत होइए.स्वयं अपने शब्दों में एक रूपन्तर तैयार कीजिये.केवल इस बात का ध्यान रखें कि वे वचन की आत्मा के अनुरूप हों.फिर,जब आप 'सही रवैयों' का अपना रूपान्तर तैयार कर लो,तब उसके छापकर,किसी ऐसे स्थान पर रखिये,जहाँ वह आपकी द्रिष्टि में बार-बार पडता हो.

फिर मेरा यह सुझाव है,कि आप एक ऐसे 'सही रवैये' का चुनाव करें,जो आपकी जीवन-स्थिति के अनुकूल हो.स्वयं से यह प्रश्न पूछिये,"कौन सा सही रवैया मेरी स्थिति के अनुकूल है?"

अपनी जीवन-स्थिति के अनुरूप,किसी 'सही रवैये' का चुनाव करने के पश्चात,उस पर मनन करें.'यह सही रवैया मुझे किसी स्थिति से निबटने के संदर्भ में,क्या शिक्षा देता है?'इस प्रश्न के उत्तर के लिये,अपने ह्रिदय की गहराईओं की आवाज़ ध्यानपूर्वक सुनें.

आपको उस प्रश्न का उत्तर मिलने में या तो कुछ ही क्षण लग सकते हैं,या कुछ महीने भी लग सकते हैं.हार न मानें.उस प्रश्न को अपने ह्रिदय में संजो कर रखें.और तब तक प्रतीक्षा करें,जब तक आपका ह्रिदय आपको उस प्रश्न का उत्तर नहीं दे देता.और एक बार जब आपको अपने प्रश्न का उत्तर मिल जाता है कि हम अपनी जीवन-स्थिति में वह 'सही रवैया' किस प्रकार उतार सकते हैं,तब आप उस 'सही क्रिया' को करने में विलम्ब न करें.ये 'सही रवैये' हमें पर्मेश्वर के ह्रिदय की गहराईओं से निकलते सत्य के साथ साक्षातकार कराते हैं.जिस प्रकार,ये 'सही

रवैये',हमारे मतों और पूर्वधारित धारणाओं को चुनौती देकर,हमें शुद्ध प्रेम की ओर अग्रसर करते हैं;वैसी और कोई शिक्षा नहीं करती.
इन 'सही रवैयों'का नाम लेना,धार्मिकता है;परन्तु उन पर कार्यशील होना,क्रांतिकारी है.
जहाँ कहीं इन 'सही रवैयों' को अपने आचरण में नहीं उतारा जाता,वहाँ,वे केवल बेमतलब शब्द बन कर रह जाते हैं.उस स्थिति में ये वचन,केवल कोरे आदर्शों के प्रतीक बन कर रह जाते हैं,जो कि संसार में व्यर्थ से भी बदतर हैं.संसार ऐसी धार्मिकता से ऊब चुका है,जो दुखियों की सहायता में अपने हाथ बढाने से कतराती है.
परन्तु जब कभी और जहाँ कहीं,इन 'सही रवैयों' को व्यक्तिगत आचरण में उतारा जाता है,वहाँ ये 'आदर्श' कारगार विचारों का रूप धारण कर लेते हैं;वे एक ऐसी दैविक कार्यसूची का रूप धारण कर लेते हैं,जो समस्याओं की जडों तक जाती हैं और ऐसे व्यक्तिगत विकास और सामाजिक परिवर्तन का सुसमाचार लाति हैं,जो एक बेहतर संसार के लिये हमारे स्वपनों की उपलब्धि में कारगार सिद्ध होती हैं.
हममें से प्रत्येक वह व्यक्ति,जो अपनी समस्याओं के सम्मुख,कमज़ोरी का अनुभव करता है-उसे अपनी कार्यशीलता की क्षमता को पहचानना आवश्यक है;और हममें से प्रत्येक वह व्यक्ति,जो भय का अनुभव करता है-उसे अपने साहस से अवगत होना आवश्यक है.हममें से प्रत्येक वह व्यक्ति,जो निर्बल महसूस करता है,उसे अपने कार्यों की संभावनाओं की सही पहचान करना आवश्यक है;और हममें से वह प्रत्येक व्यक्ति जो स्वयं को महत्त्वहीन मानता है,उसे अपनी क्रियाओं के परिणामों की सही पहचान से अवगत होना आवश्यक है.

सत्य की प्रत्येक क्रिया,झूठ पर विजय है.प्रेम की हर एक क्रिया,घ्रिणा पर विजय है.न्याय की प्रत्येक क्रिया बर्बरता पर विजय है.शान्ति की प्रत्येक क्रिया खून-खराबे पर विजय है.और सही बात व्यक्त करने के लिये,जब कोई भी व्यक्ति कितना छोटा-सा ज़ोखिम भी उठाता हो,तब वह एक बेहतर संसार के निर्माण के युद्ध में एक विजय है.

इसलिये,आप जिस किसी हद तक,'सही रवैयों' को अपने जीवन में उतार सकते हैं,उतना अवश्य कीजिये.उस प्रेम और न्याय का अभ्यास कीजिये,जो इन 'सही रवैयों' का केन्द्र है.इस प्रक्रिया में गलतियाँ करने से न घबराएं;अपनी गलतियों से सीख ग्रहण कीजिये.कोई भी चीज़ जो करने योग्य है,उसे अवश्य कीजिये.इस बात से कोई फर्क नहीं पडता कि उनका आरम्भ अच्छा होता है या बुरा.परन्तु यदि हम वास्तव में अच्छाई करना चाहते हैं,तब हमें उसमें निरंतर प्रगति करने का मन बना लेना चाहिए.जैसा कि किसी ने कहा है,"अभ्यास संपूर्णता की ओर ले जाता है."

एक दूसरे को सच्चे क्रांतिकारी बनने की प्रक्रिया में सहायता करने के लिये,हमने एक वेबसाईट खोली है.

इस वेबसाईट का नाम है-डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू.वीकैन.बी(जिसे कुछ उदार बेल्जियनों ने दान किया है).इस वेबसाईट का लक्ष्य एक दूसरे को वह परिवर्तन बनने के लिये प्रेरित करना है,जो हम संसार में देखना चाहते हैं.इस वेबसाईट का विशिष्ट उद्देश्य है-एक दूसरे को 'सही रवैयों' को अपनाने के लिये प्रेरित करना.यह युक्ति इस प्रकार की है कि हम ऐसे तंत्र का निर्माण करें,जिसमें हम एक दूसरे को 'प्लान-बी'अपनाने में और 'सही रवैयों' का अभ्यास करने के लिये प्रेरित करें और अपने प्रयोगों को आपस में बाँटें.हम मति ५ के पदों १-१२(और लूका ६ के पदों २०-२६) को

'सही रवैयों' के उदाहरण मानकर आगे बढते हैं.और हमारे आगे बढने का मंत्र,महात्मा गांधी के ये वचन हैं,"जो परिवर्तन हम संसार में देखना चाहते हैं;हमें वही बनने का प्रयास करना चाहिए."
ऐसे ६ तरीके हैं,जिनके प्रयोग से,हम इस वेबसाईट के माध्यम से,लोगों की सहायता करना चाहेंगे.
हम चाहते हैं कि लोग:
१. प्रेरित हों.-गीतों,वचनों,चित्रों द्वारा
२. प्रोत्साहित हों.-संसार भर की कहानियों द्वारा
३. जानकारी प्राप्त करें-वर्तमान के समाचारों और द्रिष्टिकोणों के माध्यम से
४.एक दूसरे से संपर्क में रहें-लोगों के गुटों के माध्यम से
५.सक्रिय हों-व्यवहारिक अभियानों के माध्यम से
६.मनन करें-आत्मा से प्रेरित चिंतन/मनन के माध्यम से.
अत:,लोगों को हमें प्रेरित करने के लिये,वचन,गीत और चित्र भेजने की आवश्यकता है;'प्रोत्साहित होने' के लिये सच्ची कहानियाँ(आपकी अपनी भी)भेजने की आवश्यकता है;'जानकारी प्राप्त' करने के लिये,समाचार,द्रिष्टिकोण,लेख और संपादन भेजने की आवश्यकता है;'संपर्क में आने के लिये,संभावी सहभागियों के गुटों के नाम भेजने की आवश्यकता है,'सक्रिय होने' के लिये,प्रेम,शान्ति,न्याय और संपोषण-संबंधी अभियानों का विस्त्रित विवरण भेजने की आवश्यकता है;और 'मनन करने' के लिये कई विचारशील लेख भेजने की आवश्यकता है.
हमारी प्रार्थना है कि हम सत्ता-प्रधान शक्तियों की अपेक्षा,'लोकाशक्ति' की मिसालें बन सकें.

जब मैनें वेबसाईट के विषय पर,अपने कैथलिक वर्कर मित्र,जिम डाउलिंग को ई-मेल किया,तब उन्होनें निम्नलिखित उत्तर दिया:
'डेव,मुझे व्यक्तिगत रूप से,'सही रवैयों' को मार्गदर्शक के रूप में,मस्सेहियों में चरचित होने का विचार पसंद तो है;परन्तु मैन किसी ऐसे विचार को अपनी सहमति नहीं दे सकता,जिसकी मुख्य मांग यह है कि लोग 'नेट' पर अपने व्यक्तव्यों पर हस्ताक्षर करें.हालांकि मैं गलत हो सकता हूँ.(गलत होने की हमेशा एक पहली बारी होती है);परन्तु मेरे विचार में,इस कदम का दुरुपयोग हो सकता है.लोगों को ऐसा प्रतीत हो सकता है कि वे कुछ कर रहे हैं.(जब कि वास्तव में वे ऐसा कुछ नहीं कर रहे.).एक समय था जब कई व्यक्ति सोचते थे,कि वे मात्र सभाओं में उपस्थित होकर,युद्ध का विरोध व्यक्त कर रहे थे.अब वे सभाओं से भी परहेज़ करके,स्वयं को इन्टेरनेट तक ही सीमित रख सकते हैं.हालाँकि मैं अब इस मशीन का व्यापक प्रयोग करता हूँ,फिर भी मुझे इसके विषय में शक़ है.फिर भी,मेरी कामना है कि सब ठीक-ठाक हो.और मैं गलत सिद्ध हूं-जिम.'
मेरे विचार में जिम ने बडी सही बात सामने रखी है.केवल उसी स्थिति में,यदि हमारी वीकैन.बी वेबसाईट,वास्तविक संसार के लोगों को दरिद्रता और हिंसा से जूझने को प्रेरित करती है,तभी वह उपयोगी साबित होगी.परन्तु,अपनी शंकाओं के बावजूद,जिम की यह कामना है कि सब ठीक-ठाक हो और वह गलत सिद्ध हो.
हम जिम को उसी स्थिति में गलत ठहरा सकते हैं,यदि हम इस वेबसाईट को अपनी व्यक्तिगत-राजनैतिक-आत्मिक क्रांति के स्वयं-संचालित कार्य के लिये,एक स्रिजनात्मक संसाधन के रूप में प्रयोग में लायें;न कि उस कार्य से परहेज़ करने के लिये.

'कोल्ड टर्की' नामक एक लेख में,प्रसिद्ध,व्यंग्यात्मक अमरीकी लेखक,कर्ट वौनेगट यह लिखता है,"किसी कारणवश,हममे से सबसे सक्रिय मसीही कभी 'सही रवैयों' का ज़िक्र नहीं करते,परन्तु 'दस निर्देशों' के संदर्भ में,इन्हीं लोगों की आँखों में न केवल आँसू आ जाते हैं;बल्कि वे मांग करते हैं कि उन निर्देशों को सार्वजनिक इमारतों पर लिखा जाए.वास्तव में,यह मूसा है,येशू नहीं.मैने अभी तक एक भी ऐसे मसीही व्यक्ति को यह मांग करते नहीं पाया है,कि सार्वजनिक स्थलों पर,'पर्वत पर दिए संदेश'और 'सही रवैए' लटकाए जाएं.मेरे विचार में,अब वह समय आ गया है,जब हम कर्ट की इस चुनौती पर खरे उतरकर,'सही रवैयों'को व्यापक रूप से विग्यापित कर सकें.

मुझे यह बात ग्यात है कि लूथर ने जब सुधार की ९५ बातें,अपने कलीसिया के द्वार पर पोस्ट की थीं,तब उसका परिणाम,उस समय की कलीसिया का सुधार निकला.मेरे विनम्र विचार में,यदि हम,'सही रवैयों' की प्रतियाँ भी,निजी और सार्वजनिक स्थलों पर लगा दें-जैसे अपनी कलीसिया के द्वार पर,तब इसका परिणाम एक ऐसा नया और जडों तक जाता सुधार हो सकता है,जो न केवल 'क्रिपा' को सिद्धान्त के रूप में प्रस्तुत करे,बल्कि उसे अभ्यास करने योग्य प्रक्रिया के रूप में भी प्रस्तुत कर सकता है.(अभी तक,तो,'सही रवैये'केवल हमारे शयन-कक्षों के द्वारों की पिछली ओर ही लगे पाए जाते हैं.)

कल्पना कीजिये कि तब क्या हो सकता है,यदि अपने मतों को केवल मुख से दोहराने की बजाए,हम प्रत्येक सप्ताह का प्रारम्भ,'सही रवैयों' पर मनन करके करें,इससे हमारा ध्यान,मसीहरूपी,नैतिक प्रतिक्रियाओं पर केन्द्रित हो सकता है.

कल्पना कीजिये कि क्या हो सकता है,यदि हमारी

कलीसियाएं,मंदिर,यहूदी प्रार्थनाघर और मस्जिद,ऐसे ज्वलंत समर्थक गुटों के रूप में परिवर्तित हो जाएं,जो कि विभिन्न मतों के व्यक्तियों के 'सही रवैये'अपने जीवनों में,समग्रित कार्यक्रमों के रूप में उतारने के संदर्भ में सहायता प्रदान करें?'

प्रिष्ठ ३३

जो कार्य ए.ए. गुटों ने,मदिरा के लिये हमारे लगाव के साथ किया है;वही कार्य 'सही रवैये' के गुट,हमारे सामाजिक दर्ज़े और हिंसा के प्रति लग्गव के साथ कर सकते हैं.ऐसे गुट हमें पूर्णत: मानवीय,जीवांत और पूर्णत: सक्रिय कर सकते हैं-ताकि हम स्वयं से भी और अपने पडोसियों से भी प्रेम कर सकें.

हम आपको,एक दूसरे की इन संभावनाओं को खोज निकालने में सहायता के लिये निमंत्रण देना चाहते हैं.ऐसा हम निम्नलिखित कदम उठाकर कर सकते हैं:

*'सही रवैयों' के जितने सुंदर,विविध,रूपान्तर हम विकसित कर सकें या खोज सकें-उतना करके.

*'सही रवैयों' के अपने पसंदीदा भाग को,किसी ऐसे स्थान पर चिपका कर,जहाँ आपकी उस पर निरंतर द्रिष्टि पड सके-जैसे आपके शयन-कक्ष के द्वार के पीछे.

*'सही रवैयों' के अपने पसंदीदा अंश को,किसी ऐसे सार्वजनिक स्थान पर चिपका/लटका कर,जहाँ अन्य लोगों की द्रिष्टि भी उस पर पड जाये-जैसे आपकी कलीसिया का मुख्य द्वार.

*'सही रवैयों' के उपयुक्त अंशों को वीकैन.बी वेबसाईट पर पोस्ट करके.

*वीकैन.बी वेबसाईट पर 'सही रवैयों'का अभ्यास करने के प्रण पर हस्ताक्षर करके.

*स्वयं,'सही रवैयों'पर चिंतन,मनन करके;कार्य करके उनका अभ्यास करने से.
*वीकैन.बी वेबसाईट के माध्यम से अपने निजी अनुभवों को बाँटकर.
*जिन वचनों,गीतों और चित्रों से आपको प्रेरणा मिली है,उन्हें इस उद्देश्य से इस वेबसाईट पर भेजना,ताकि अन्य व्यक्ति भी उनसे प्रेरणा ग्रहण कर पाएं.
*अन्य व्यक्तियों को 'प्रोत्साहित करने'के उद्देश्य से,सच्ची कहानियाँ भेजना-इनमें आपके जीवन की आप-बीती भी सम्मलित है.
*अन्य व्यक्तियों को उचित जानकारी देने के लिये,साईट पर अपने समाचार,नज़रिए,लेख और संपादन भेजना.
*संभावी सहभागियों को 'संपर्क में लाने' के लिये,उनके गुटों के नाम भेजना.
*'सक्रिय' होने के लिये,शान्ति और न्याय के अभियानों की विस्त्रित जानकारी भेजना.
* हमें चिंतनशील बनाने के उद्देश्य से,कई लेख भेजना.
परन्तु यह अवश्य स्मरण करें-हम अन्य व्यक्तियों को बदल नहीं सकते-हम केवल स्वयं को परिवर्तित कर सकते हैं.सो,आईए,हम अपने सामन्य दैनिक जीवनों में,'सही रवैयों' को उतारने के लिये समर्पित हो जाएं और वह परिवर्तन बनने का प्रयास करें,जो हम संसार में देखना चाहते हैं.
प्रिष्ठ ३४
सही रवैयों का प्रण
मैं वह परिवर्तन स्वयं बनना चाहता हूं,जो मैं संसार में देखना चाहता हूँ:
१.मैं दरिद्रों के साथ अपनी 'आत्मा' में सहानुभूति रखूंगा.
२.मैं संसार में व्याप्त अन्याय पर शोक मनाऊँगा.

३.मैं क्रोधित अवश्य हौँगा,परन्तु कभी हिंसात्मक नहीं.

४. मैं अपने शत्रुओं के लिये भी न्याय की मांग करूँगा.

५. मैं सभी ज़रूरतमंद व्यक्तियों को दया दिखाऊंगा.

६. मैं एकाग्रता प्राप्त करने के उद्देश्य से कार्य करूंगा,दिखावे के लिये नहीं.

७. मैं हिंसा के मध्य में,शान्ति के लिये कार्य करूंगा.

८. मैं अन्य व्यक्तियॉं पर दुख थोपने की बजाए,स्वयं दुख उठाने को तत्पर रहूंगा.

हस्ताक्षर..... दिनांक.....

चेतावनी: हमें 'सही रवैयों' को गंभीरता से लेने की आवश्यकता;परन्तु हमें स्वयं को अत्यधिक गंभीरता से नहीं लेना चाहिए.

,